सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टि प्रेम स्पर्श

VIBRANT PUSHTI

“ जय श्री कृष्ण “

મારા સન્માનિય મિત્રો 🌷🙏🌷

હિન્દુ સંસ્કાર અને સંસ્કૃતિ આધારિત એક પુસ્તક પ્રકાશિત કરી રહ્યો છું 🙏

આ પુસ્તક ની આવશ્યકતા આપણાં જીવન ની અજ્ઞાનતા અને અંધશ્રદ્ધા ને ઉજાશ અને જ્ઞાન માં વૃદ્ધિ કરી આપણું જીવન યોગ્ય અને સત્ય સમજવા જ તૈયાર કર્યું છે 🌷🙏🌷

હું આપનો આભારી થઈશ આપનું સૂચન મને વિશેષ મહત્વ સમજાવશે. 🌷🙏🌷

"Vibrant Pushti "

"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

कितना गुमान है मुझमें

कितना अभिमान!

कितना अहंकार है मुझमें

कितना घमंड

कितना गर्व है मुझमें

कितना गुरुर

कितनी घृणा है मुझमें

कितनी इर्ष्या

कितनी नफरत है मुझमें

कितना तिरस्कार

हे जीव! तु बाहर से जीतना भी आडंबर करें

तुझमें क्या क्या है तु ही समझ लें

बस यही समझ जो तु जीता है वही तु पाता है 🌷🙏🌷

इसलिए दर दर भटकता है 🌷🙏🌷

तु ही तुझसे जान लें तो ही तु जीवन समझ लें

तु ही तुझसे पहचान लें तो ही तु भगवान पहचान लें 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री यमुनाजी का अवतरण कलिन्द गिरि मस्तक से वह चली और पूरा व्रज घुम कर श्री गंगाजी में सम्मिलित हूई।

कुछ तो रहस्य होगा ऐसे अवतरण का 🌷🙏🌷

अति गहराई से श्री विठ्ठलनाथजी अपने अलौकिक अनुभव से कहते हैं

श्री यमुनाजी अपने स्वरुपसाम्यके वैशिष्ट्यसे लीलोपयोगिनी अर्थात लीलासंपादनकत्रीके आधारभूत कर्तृत्वका सामर्थ्य रखती हैं। 🌷🙏🌷

गृणाति उपदिशति वेदादि शास्त्राणीति गुरु:

यद्वा गीर्यते स्तूयते देवदानवगन्धर्व मनुष्यादिभिरिति गुरु:

यद्वा गीर्यते स्तूयते महत्तवादिति महान् गुरु: 🌷🙏🌷

" गृणाति उपदिशति वेदादि शास्त्राणीति गुरु: "

हे यमुनाजी! आप कितनी अद्भुत हो। 🌷🙏🌷

श्री वल्लभाचार्यजी को व्रजभूमि में इतने अलौकिक अनुभव हुए होंगे जो पुष्टिमार्ग की " धात्री " से सम्मानित किया 🌷🙏🌷

हे अनंत गुणों भरी!

अमंद उत्कट रेणु भरी!

शास्त्रोक्त अक्षरशः अक्षरशः भरी!

हे यमुनाजी! आप कितनी अलौकिक हो

परब्रह्म परमात्मा जो सदा

आपसे अंतरंग लीला करें

- आपसे परम प्रेम अग्नि प्रकटाये - आपसे सदा प्रेम लक्षणा भक्ति सिद्ध कराये

- आपसे परमानंद पुष्टि लीला से रंगाये

आप कितने अनोखे हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे यमुनाजी!

बूंद बूंद से कृष्ण नाम रस में डूबोये

पुष्टि भक्ति से तनुनवत्व स्पर्शाये

रग रग अमंद उत्कट रेणु स्पंदनाये

हे गिरिराजजी!

कण कण व्रजलीला दर्शाये

रण रण श्रीनाथ परिक्रमा कदमाये

धण धण गौधूली उडाये

राधा लीला कृष्ण लीला

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे दिल में तु बसा है

यही मेरी प्रेम पूजा है

तु चाहे कितना भी दर्द दें

यही मेरे प्रेम रजा है

हे कान्हा! तु ही कहें

है कोई दिल तेरे पास

जो मुझसे तु दूर करें?

तु नैनों में दिखता है

तु सांसों में जागता है

तु चाहे कितना भी रुठ लें

यही मेरे प्रेम सजा है

हे कान्हा! तु ही कहें

है कोई खता तेरे पास

जो मुझसे तु दूर करें?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" प्रभाव - स्वभाव "
" स्वभावविजयो भवेद्वदति वल्लभ: श्रीहरे "
हे आचार्य! आप कितने निर्भय हो 🙏
जो प्रभाव भरे हैं वह कितने भयभीत हैं 🙏
जो बार बार कहते रहते हैं - स्व को देखो
आप सिधारे 🙏
सब प्रभावित हो गये
आप सिद्धे
सब स्वाभाविक हो गये
आप जब थे तब भी कलयुग था और आज भी कलयुग है
कोई कुछ भी कहता है - आपके कुल में ही प्राथमिक कलयुग प्रवेश करेगा 🙏 नहीं नहीं
आप जगद्गुरु है 🌷🙏🌷
जो सदा अजर अमर है। जो अ-मृत है।
आपसे ही जीव वैष्णव और वैष्णव से ही पुरुषोत्तम 🙏
इसलिए जो वैष्णव है वही कह सकता है
यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानधर्मस्य
तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां
विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय
सम्भवामि युगे युगे।।
इसलिए तो जो अपने आप को वैष्णव समझते हैं वह तो जागृत है। 🙏
उठो और जो प्रभाव है वह नष्ट करो 🌷🙏🌷
तब ही श्री वल्लभ को हम नमन करें 🙏
वंदन करें 🙏
प्रणाम करें 🙏
साष्टांग दंडवत प्रणाम करें 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यमुना हे यमुना यमुना हे यमुना
यमुना - यम + उना
मय + नाउ
जो मैं नहीं वह यमुना 🙏
कितनी अनोखी व्याख्या हो गई
हे वल्लभ! मुझे क्षमा करना 🙏
यमुना की परिवर्तित व्याख्या की
जब भी स्मरण होता है उनका
कुछ स्पंदन जागते हैं
कुछ असर होती हैं
कुछ स्पर्श होता हैं
हे यमुनाजी! आपका नाम गुनगुनाता हूं
गूंज उठती हैं मन से
गूंज उठती हैं तन से
गूंज उठती हैं हृदय से
गूंज उठती हैं आत्म से
हे वल्लभ! आपने हमें अलौकिक साध्य की पहचान करवाई हैं। 🌷🙏🌷
जो पुष्टिमार्ग साधन से हम उनके हो रहे हैं 🙏
हे यमुनाजी! आपको प्रणाम 🙏
यमुनाजी तुम्हारे सानिध्य में
पुष्टि प्रज्ञा हममें जागती हैं
यमुनाजी तुम्हारे निकटतम में
पुष्टि उर्जा हममें दमकती हैं
यमुनाजी तुम्हारे स्मरण में
पुष्टि दासत्व हममें स्फूर्ति हैं
यमुनाजी तुम्हारे ख़्याल में
पुष्टि पूजा हममें प्रवर्ति हैं
"हे यमुनाजी! 🌷🙏🌷"
"Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चलते चलते चलते चलते

विचलते विचलते विचलते

आत्मा आंचल परिवर्तते

कोई मिलता है

मिलता है मिलते मिलते

एकात्म होता है

होता है होते होते होते

बिछड़ते है

दूर दूर कहीं दूर और दूर

नजर से दूर स्पर्श से दूर

नहीं बिछड़ते ख्यालों से

नहीं दूर होते है यादों से

सांस चलें तो उच्छवास वहां निकले

कांटा चुभे तो दर्द वहां उठे

एक हो द्वारिका तो दूजा हो व्रजधाम

एक हो वृंदावन तो दूजा हो द्वारिका

एक हो गिरिराज तो दूजा हो नाथद्वारा

एक हो जगन्नाथ तो दूजा हो काशी

एक हो पृथ्वीलोक तो दूजा हो गोलोकधाम

ऐसी प्रेम लीला जगाई जो हर रंग रंगाई

हे कान्हा! तुम जहां हो वहां ही मेरी प्रेम दुहाई

हे कान्हा! तेरे रंग में ही मैं रंगाई 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जगन्नाथ जिसका रथ हांके "

हे भारत की पहचान! सच कितनी अलौकिक यह संस्कृति जिसमें जो भक्त हो - जो सत्यप्रिय हो - सत्य आचरणीय हो - सत्य आदरणीय हो और संस्कार पालनीय हो वहां सदा आनंद ही उत्सव होता हैं।

वैर, कटुता, अंधश्रद्धा, कपटता, अहंकार, दुष्टता और अविश्वसनीय जैसा अज्ञान और अंधकार नष्ट हो जाता हैं।

हर एक का मन विशुद्ध, पवित्र और प्रीतमय हैं वहां आध्यात्मिक का दीपक सदा प्रज्वलित रहता है।

यहां शिस्तबद्ध जीवन जीते हैं वह स्थली पर " जगन्नाथ अपने भक्तों का रथ हांकते हैं।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यही है याद फरियाद

यही है सांझ सवेरा

यही है साज आवाज

यही है नदी किनारा

यही है बादल बरसात

यही है धूप छांव

यही है धरती आसमां

यही है तन दामन

यही है मन मोहन

यही है भाग्य भगवान

यही है राग त्याग

यही है रात दिन

यही है प्रेम पूजा

जिसके लिए तड़पते रहते हैं सांस भर

जिसके लिए भटकते रहते हैं जीवन भर

हां हां हां हां हां!

हां हां हां हां हां!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा! हे कान्हा!

तोरी पायल मेरे नाम गाएं

कान्हा! हे कान्हा!

तोरी पायल तेरा प्रेम पूकारे

कान्हा! तु नयन से दूर

नहीं तु मन से दूर

जैसे रुठे मुझसे तु करीब होय

तोरी पायल तेरा गीत गाएं

कान्हा! तु धड़कन से दूर

नहीं तु दिल से दूर

जैसे छुटे मुझसे तु आत्म होय

तोरी पायल तेरा प्रेम लुटाएं

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कोई ऐसी रात नहीं जिसका सवेरा नहीं होता

कोई ऐसी भक्ति नहीं जिसका आधार नहीं होता

अरे! कोई ऐसी प्रीत नहीं

कोई ऐसी प्रीत नहीं जिसका प्रियतम नहीं होता

हे कान्हा!

तु नाथद्वारा रहें

तु द्वारिका रहे

तु जगन्नाथ रहे

तु कोई स्थली रहें

पर

तेरा सवेरा तो मेरे आत्मा के सूर्य किरणों से ही है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जो तेरे दिल में खोट नहीं

अपने किये पर कभी न पछताना

तेरा मेरा कुछ भी नहीं है

मेरा तेरा कुछ भी नहीं है

है सबकुछ है कान्हा का

हां! है कुछ तेरा मेरा प्रेम करना

जो पहचान पहचान से ही पाना

कान्हा गया अकेला

राम गये अकेले

बुद्ध गये अकेले

मातापिता गये अकेले

सुखदु:ख दु:खसुख है जनम में

मेरी तेरी परिक्षा है प्यारे

जिसका मन साफ है

दुनिया से क्या डरना

न तु मेरा कुछ ले सकता है

न मैं तेरा कुछ ले सकता हूं

जो लिया वह अवश्य चुकाना

अपने हाथों से अपना पाना

जैसे श्री वल्लभाचार्य

जैसे श्री मीराबाई

जैसे श्री गुरु नानक

जैसे प्रियतम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" काल - वर्तमान काल, भूत काल, भविष्य काल, प्रातः काल, पुरुषार्थ काल, सायं काल - विश्राम काल, संध्या काल और जो जो समय के साथ जरुरत है तो तत्काल।

गजब है यह काल चक्र 🌷🙏🌷

जो यह समय और काल को पहचान गया वह काल विजयी हो गया 👍

यह काल का एक एक प्रहर - गति समझनी होती हैं।

प्रातः काल - यह काल आरंभिक काल है - जो आरंभिक काल में जाग गया वह हर काल के लिए जागृत रहने की क्षमता रखते हैं।

प्रातः काल - जीवन का ऐसा काल है जिसमें जीव और शिव एक होते हैं 🌷🙏🌷

पुरुषार्थ काल - जो जीवन को योग्य और मधुर करने का काल। जिसमें विश्वास, निरपेक्ष, शिक्षा बुद्धि और वचन के लिए कार्य करना है 👍

सायं काल - विश्राम काल

जो पुरुषार्थ यज्ञ की विश्रांति 🙏

निति - नियम, श्रद्धा विश्वास, सत्य पवित्र और शिस्त से स्व यापन करते करते आवश्यक होता है - विश्राम - जो नई उर्जा और नवत्व उत्स करें वह काल 🙏

संध्या काल - जो समर्पण - सेवा निधि करते करते आभार व्यक्त करने का काल 🌷🙏🌷

और आखिर है - तत्काल! जो हर एक को चाहिए। जो हम अपने मन से चलाते चलाते - बरबाद, दु:ख, अज्ञान, अंधकार और अंधश्रद्धा जो चलते चलते हमें भी बरबाद करते हैं। 🌷👍🌷

Vibrant Pushti " 🌷👍

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बार दर्शन में आरती करते करते मुख्याजी ने श्री प्रभु विग्रह देखते अचंभित हो गए - उन्होंने ने देखा श्री प्रभु अपनी नज़र दाएं हाथ की ओर एक वैष्णव बैठा था उनके साथ अठखेलियां कर रहे थे। मुख्याजी ने आरती और मंत्र सावधान हो कर श्री प्रभु की लीला देख रहे थे।

आज आरती में कुछ अनोखा स्पर्श कर रहे थे। मन अस्थीर तन अस्वस्थ और समय रुका हुआ लग रहा था।

इतने में टहल हूई - कल्याणराय प्यारे की जय 🙏 मुख्याजी स्वस्थ हो कर आरती की प्रक्रिया समाप्त कर दी।

वह अपने कक्ष में जाकर असंमजस का महसूस करते सोचने लगे - कौन है वह वैष्णव?

बस सोचते रहे - सोचते रहे।

इतने में टहल सुनी - जय हो! जय हो!

दौड़ते दौड़ते टेरा आवरण से दर्शन समाप्त की रीत समाप्त की और फिर अपने कक्ष में आ कर बैठ गए, मन मुरझाता था, कुछ आगे क्या करना है वह समझ नहीं आ रहा था।

सोचते सोचते अकेले ठिठ्ठले गुमसुम थे। सब भीतरिया अचंभित हो गए थे - सोच रहे थे - मुख्याजी को क्या हूआ है?

समय अपना कार्य करता बह रहा था और अवेर सुनी - शृंगार के दर्शन 🙏

मुख्याजी के कक्ष के आसपास हलचल बढ़ गई, पर मुख्याजी ऐसे ही निष्क्रिय बैठे हुए थे।

इतने में आवाज आई - मोहन! ओ मोहन! मुख्याजी तुरंत उठ कर अपने द्वार की ओर बढे तो देखा श्री आचार्य चरण खडे थे।

प्रणाम किया और कहा - क्या आज्ञा है?

श्री आचार्य चरण ने कहा - मोहनजी! क्या बात है? आप स्वस्थ हो न?

इतना सुनते ही मुख्याजी के नैनों से आंसू बहने लगे।

ओह!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओह! अनेकों जीव
अनेकों स्वभाव
अनेकों मन
अनेकों जगत
अनेकों क्रिया
अनेकों नियम
अनेकों सृष्टि
अनेकों वृत्ति
अनेकों निर्वाह
अनेकों सत्य
अनेकों मान्यता
अनेकों स्वीकार्य
तो
हम कैसे कह सकते हैं - यही ही योग्य
हम कैसे सुन सकते हैं - यही ही योग्य
हम कैसे कह सकते हैं - यही ही सत्य
हम कैसे सुन सकते हैं - यही ही सत्य
हम कैसे स्वीकार कर सकते हैं - यही ही सत्य
हम कैसे अपना सकते हैं - यही ही सत्य
ऐसा क्यूं?
हमारे नैन
हमारा मन
हमारा स्वभाव
हमारी मान्यता
हमारी कक्षा
हमारे अनुभव
हमारा शिक्षण
हमारे विचार विमर्श
हमारी श्रद्धा
हमारा विश्वास
ओहहह! तो तो अस्थिर
ओहहह! तो तो असंमजस
ओहहह! तो तो असंभव
देख लो - अनेकों अनेकों और अनेकों
बस जीते जाव - जीते जाव - जीते जाव
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "
क्रमशः

जय जय - जय जय

खडे रहो - खडे रहो

एक उम्र भरा व्यक्ति अपने श्री प्रभु को मिलने की तालावेली में दर्शन का समय समाप्त होने की वेला में चिल्ला चिल्ला कर दौड़ रहा था।

जय जय - जय जय

जैसे हवेली द्वार पहुंचा दर्शन द्वार बंध हो रहे थे। वह जोर जोर से चिल्लाता कह रहा था - ठहरों! ठहरों!

जैसे निकट पहुंचा टेरा लग गया था। वह तड़पने लगा। वह एक ही नजर से टेरा द्वार को देख रहा था, और नैनों से अमिलन विरही वेदना अश्रु धारा बहा रहा था।

मनसे बातें कर रहा था - प्रभु! यह कैसी लीला?

तुम बिन न दिन हमारा

तुम बिन न रात

तुम ही हो ऐसा सहारा

कटे जन्म जीवन जात

हे प्रभु! तुम्हारे संसार में तुमने मुझे डूबोया

तुम्हारे संसार में तुमने ही मुझे थामा

तो यह टेरा क्यूं?

और टेरा खुल गया - वह दर्शनार्थी ने अपने अंतर बाह्य की स्वरुपता से श्री प्रभु से संयोग किया और टेरा बंध 🙏

मुख्याजी ने उन्हें उठाया और कहा - हे पुष्टिजीव! तुम्हारी विरह वेदना अनोखी है, तुम अवश्य अपने गृहसेवा सेव्य श्री प्रभु से अति गहरी निकटता धरते हो।

तुम्हारे गृह स्थापत्य श्री प्रभु यहां पधार कर मुझे आज्ञा की - यह वैष्णव को हवेली बिराजमान श्री प्रभु का दर्शन करवाओ 🙏

यह आज्ञा ने मुझे द्रवित कर दिया और मैंने भी पाया श्री पुष्टि दर्शन 🙏

तुम धन्य हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कोई न कोई हररोज चित्रजी से श्री प्रभु का दर्शन करवाएं 🌷🙏🌷

कोई न कोई हररोज कीर्तन से श्री प्रभु का गुणगान सुनाएं 🌷🙏🌷

कोई न कोई हररोज अपना अंतर ज्ञान भाव से सत्संग करवाएं 🌷🙏🌷

कोई न कोई हररोज स्व अनुभव से प्रेरणा जगाएं 🌷🙏🌷

कोई न कोई हररोज कोई सूचन से स्व जीवन यथार्थे 🌷🙏🌷

कोई न कोई हररोज कोई स्व विचार से विद्‌यता समझाएं 🌷🙏🌷

कोई न कोई हररोज पढ़ते, सुनते अपने आप को योग्य बनाएं 🌷🙏🌷

कोई न कोई हररोज संकेत से अपनी यथार्थता समझाएं 🌷🙏🌷

सच! कितना मधुर है हमारा जीवन जो हररोज कोई न कोई रीत से मन - मन, तन - तन, धन - धन, जीवन - जीवन, धर्म - धर्म, कर्म - कर्म, मर्म - मर्म महकाएं - सिद्‌धाएं, आकर्षाएं, जगाएं 🌷🙏🌷

धन्य है - धन्य है - धन्य है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यमुना

यमुनाजी

श्री यमुना महाराणी

श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी

हम बार बार स्मरण करते हैं श्री यमुनाजी को

ऐसे ऐसे ऐसे ऐसे

हर स्मरण का ज्ञान और भाव अलग अलग है

मन मुताबिक

ज्ञान मुताबिक

भाव मुताबिक

विचार मुताबिक

समय मुताबिक

परिस्थिति मुताबिक

क्रिया मुताबिक

अपेक्षा मुताबिक

निरपेक्षता मुताबिक

सामान्यता या साधारणता से स्मरण हो तो 'यमुना 'है कोई - अर्थात भौतिक स्वरुप का ज्ञान

विवेक और विनय से स्मरण हो तो 'श्री यमुना 'जो आध्यात्मिक समझ हैं अर्थात ऐतिहासिक ज्ञान

भक्ति से स्मरण हो तो 'श्री यमुनाजी 'नु प्राकट्य 🙏 अर्थात केवल दर्शन

प्रेम मुताबिक स्मरण हो तो

'श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी 'की कृपा 🙏 अर्थात पुष्टि लीला में प्रवेश 🙏

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीवन - हर कोई का जीवन
हर कोई के मन के आधारित
हर कोई के संकल्प आधारित
हर कोई के संस्कार आधारित
हर कोई के पुरुषार्थ आधारित
हर कोई के भाग्य आधारित
हर कोई के शिक्षा आधारित
हर कोई के नीति आधारित
हर कोई के योग आधारित
हर कोई के संजोग आधारित
हर कोई के परिस्थिति आधारित
हर कोई के निर्णय आधारित
हर कोई के निश्चय आधारित
हर कोई के धर्म आधारित
कौन बदल सकता है?
कौन परिवर्तन कर सकता है?
कोई नहीं 🙏
केवल स्व मन ही परिवर्तित कर सकता है।
मन से तो मनुष्य
मन को मनाना
मन को चढ़ना
मन को संवरना
मन को मारना
मन को जगाना
केवल स्व मन
मन से संसार
मन से संस्कार
मन से जीवन
मन से जगत
मन से ब्रह्मांड
मन से प्रेम
मन से आनंद
मन से परमानंद

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीवन एक ऐसा यंत्र है

जो राम कृष्ण नाम से चलता है

जो सदा भजे राम वह जीते अहंकार अभिमान

जो सदा भजे कृष्ण वह पाये प्रेम भक्ति शृंगार

आखरी पड़ाव हर पल पल होते

तो भी दोनों स्मरण छुटावे माया संसार जंजाल

राम राम से मुक्ति पाये 🌷🙏🌷

कृष्ण कृष्ण से भक्ति पाये 🌷🙏🌷

यही है यह जगत का धाम

यही है यह संसार का संग्राम

कौन लोक जाये यह जीवडा

स्व पुरुषार्थ से पाये यह दीवडा

आत्म से परमात्मा जुडाये

छुटे एक एक लोक भटुका

हे प्रभु! हर आत्मा को सदगति देना 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ब्रह्म से परब्रह्म की यात्रा करने का सौभाग्य केवल मनुष्य को ही मिलता है।

अनेकों ऋषि मुनियों ने अपनी अपनी तपस्या और पुरुषार्थ से जो संस्कृति रची यह संस्कारों में अति सूक्ष्मता से स्पर्श करें तो

ब्रह्मांड में केवल भक्त ने ही परमानंद पाया और लुटा।

अति गहराई से समझे तो न कोई आचार्यों ने ऐसा आनंद नहीं पाया।

कितना अलौकिक विज्ञान है यह सृष्टि का जो अंश अंशी में एकात्म हो जाता है।

यथार्थता सार्थकता सामर्थ्यता केवल भक्त ही पाता है। यह भक्त ज्ञान भाव से अधिक प्रेमी होता है। जो सदा समर्पण में ही अपनी योग्यता अपनाता है। 🌷🙏🌷

यह भक्ति में शिस्त - स्वावलंबन - विश्वास - पवित्रता और सृष्टि सेवा ही मूल है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे नैन को छूआ

यह नजर तेरी

तेरे गालों को चूमा

यह तन तेरा

तेरे अधरों को पीया

यह भंवर तेरा

तेरे हाथ को थामा

यह जीवन तेरा

तेरे आत्म को पूजा

यह परमात्मा तेरा

तेरे प्रेम को लुटा

यह प्रिये तेरा

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

तुझसे है यह निशानी

जो सदा परमप्रेमी प्रिय मुझे तेरे लिए जन्म धराते है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दीप प्रकटती दीप प्रज्वलिती

ज्योत से ज्योत जगाती

मन मंदिर में बसे श्री कृष्ण

चरण कमल प्रखालती

तन नवत्व मन मनत्व

तेज तेज जगाती

शुद्ध विचारों पवित्र आचरण

जीवन जीवन प्रजाले

जगत पालनहार श्री कृष्ण

घट घट नमन धरे

जगतत्व परमत्व

नूतन आनंद उभारती

शुभ दीपावली शुभ दीपावली

शुभ दीपावली शुभ दीपावली

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे प्यार की कहानी

गूंज़ती जाय खनकती जाय

बिन पंख वह

उड़ती जाय फरकती जाय

तेरे रंग की दीवानी

तेरे संग की सुहानी

सरक सरक निकट सरकती जाय

आती जाय बहकती जाय

बिन तेरे बिरहती जाय

मेरे प्यार की कहानी

गूंज़ती जाय खनकती जाय

हे कान्हा! तु क्या है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" धन "

धन अर्थात हमारी बुद्धि - कुशाग्रता - योग्य जीवन जीने के लिए यथार्थ अर्थोपार्जन व्यवस्था

धन का संग्रह कभी नहीं होता

धन सदा बांटना और लुटाना होता है

बांटना अर्थात उन्हें सही और योग्य समय, व्यक्ति, धर्म और सेवा में उपयोग करना

लुटाना अर्थात दान करना - जो समय, व्यक्ति और समाज का उत्थान करें

धन कभी किसीका लिया नहीं जाता है।

अर्थात

धन किसीका बनावट करके

धन किसीका मूर्ख बनाके

धन किसीका निम्नता करके

धन किसीका झगड़ा करके

धन किसीका लोभामणी से

धन किसीका मुफ्त से

धन किसीका युक्ति से

धन किसीका अविश्वास से

धन किसीका धोका से

जो लिया वह रोगी, भोगी और कलयुग जीवोगी

धन पूजित है

धन गुणीत है

धन पवित्र है

धन शुद्ध है

धन पुरुषार्थी है

धन अभय है

धन ज्ञानी है

धन भक्ति है

🌷🙏🌷

आप सर्वे को धन उत्सव और त्योहार की शुभकामनाएं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दीपावली "
दीप अर्थात आप
दीप अर्थात मैं
दीप से दीप - दीपावली
आप से मैं - दीपावली
मैं से आप - दीपावली
हम दोनों इतने पूरक है जिससे यह दीप प्रज्वलित होता है।
हमारे नैनों में ज्योति है
अर्थात हमारी द्रष्टि में ज्योति है
हमारे मन में ज्योति है
अर्थात हमारे विचारों में ज्योति है
हमारे सांस में ज्योति है
अर्थात हमारे वायु में प्राण है
हमारे स्वर में ज्योति है
अर्थात हमारी गूंज में ज्योति है
हमारी गति में ज्योति है
अर्थात हमारे हर कदम में ज्योति है
हमारे कार्य में ज्योति है
अर्थात हमारे हर फल में ज्योति है
हमारे धर्म में ज्योति है
अर्थात हमारी धारणा में ज्योति है
हममें ज्योत ज्योत ज्योत
अवश्य अंधकार दूर ही रहेगा
अवश्य अज्ञान दूर ही रहेगा
अवश्य अहंकार दूर ही रहेगा
अवश्य अभिमान दूर ही रहेगा
अवश्य अपराध दूर ही रहेगा
अवश्य कपट दूर ही रहेगा
अवश्य संशय दूर ही रहेगा
यही तो हमारी संस्कृति का यह मूल उत्सव हम मनाते है 🌷🙏🌷
आप सर्वे को दीपावली कि हार्दिक बधाई 🌷🙏🌷
आनंदित शुभकामनाएं 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"दीपावली " की सच्चाई स्वीकार करें

जो सच में अपने आप में आनंद दीपक जगाये 🌷

जो सच में अपने आप में सत्य आचरण का दीपक जगाये 🌷

जो सच में अपने आप में संस्कार दीपक जगाये 🌷

जो सच में अपने आप में शुद्धता का दीपक जगाये 🌷

जो सच में अपने आप में पवित्रता का दीपक जगाये 🌷

जो सच में अपने आप में विश्वास का दीपक जगाये 🌷

जो सच में अपने आप में सेवा का दीपक जगाये 🌷

खुद ही पृथक्करण करें 🙏

यहीं ही तो अनेकों दीपावली अनुभव की अभिव्यक्ति है 🙏

कहने से दीपक जगाओ

करने से दीपक जगाओ

आचरण से दीपक जगाओ

कारण से दीपक जगाओ

धारण से दीपक जगाओ

निभावो से दीपक जगाओ

स्वीकारों से दीपक जगाओ

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

संकल्प करें दीपक जगाये

शुभ दीपावली शुभ दीपावली

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज दीपावली है - हमारा आनंदोत्सव - हमारी संस्कृति और संस्कार भरा त्योहार 🙏

हम सब सदा स्मरण में रहो श्री प्रभु के

यही ज्ञान, ध्यान और समझ से हम सदा हमारे श्री प्रभु में ही डूबे रहते है। पर श्री प्रभु का स्पर्श पाया?

हम क्या है? क्यूं है? और हमें क्या करना है? यह भी समझना अति आवश्यक है। 🙏

मैं आपको एक वार्ता कहता हूं।

एक निर्जन द्वीप था, यह द्वीप पर एक मंदिर था और मंदिर में केवल एक स्त्री सदा श्री प्रभु में मग्न रहती थी, द्वीप की वनस्पति और जल दोनों का निर्वाह के लिए काफी था और बस दोनों जीवन जी रहते थे। एक दिन स्त्री ने श्री प्रभु को पूछा - हे प्रभु! मैं हूं तो आपका निर्वाह हो रहा है या आप हो तो मेरा निर्वाह हो रहा है। अगर कल कोई ऐसी घटना हो जाये, जिससे मैं अकेली हो जाऊं या आप अकेले हो जाओ तो यह निर्वाह कैसे हो सकेगा?

यह वार्ता इतना गहरा संकेत हमें कर रही है 🙏

जीवन की कहीं धारणा और मान्यता जो अंधश्रद्धा में हमें स्वीकारी है - अपनाई है और जी रहे है उसे सत्यता से समझनी है, स्वीकार करनी है, अपनानी है।

सोचों! आगे क्या होता है?

आप अवश्य मुझे लिखिए WhatsApp - 9327297507 पर 🙏

बाकी मैं तो अवश्य कहने वाला ही हूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूर्य की गति अनुसार कल का दिन जो हम नूतन वर्ष नहीं स्वीकार कर सकते है इनका मूल कारण ' नूतन सूरज ' का उगना है। हम सूर्य पूजक है और सूर्य सदा शुद्धि और पवित्रता का प्रतीक है।

अमावस्या को अवश्य ग्रहण होता है पर हमारी संस्कृति के गणित प्रमाणित सूर्य हमारी उर्जा और शुद्धि के कर्म फल आधारित ग्रहण की वेध समाप्ति तक असर ग्रस्त रहता है।

हमारी संस्कृति में उगता सूर्य से ही हमारा जीवन विज्ञान समझना है। इसलिए कल का दिन हमें सेवा पूजन आराधना और अध्ययन में पसार करना ही हमारी धार्मिक यथार्थता है।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नूतन वर्ष अभिनंदन " 🌷🙏🌷

पूर्व की लालीमा

पश्चिम की पीलीमा

उत्तर की नीलीमा

दक्षिण की विद्यामा

नूतन नूतन किरण उगाये

नूतन नूतन रंग बिखराये

नूतन नूतन आध्यात्म सिंचाये

नूतन नूतन शिक्षा पढाये

किरणों से हम आरोग्य पाये

रंगों से हम जीवन शोभाये

आध्यात्म से हम सत्यता संचरे

शिक्षा से हम जीवन संवारे

आपके जीवन में सदा सूरज उगे

आपके जीवन में सदा फूलों खिले

आपके जीवन में सदा धर्म जागे

आपके जीवन में सदा आनंद उभरे

यही नूतन वर्ष की अभ्यर्थना 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

समय की धारा

तु धीरे धीरे चल

किसी से प्यार है

एकरार करे ये दिल

मैं तेरे लिए फूल खिलाऊं

मैं तेरे लिए धरती लहराऊं

मेरे अंग अंग से तुम्हें संवारुं

प्यार के रंग तुम पर बिखराऊं

क्यूं कहें मुझे बार बार

समय की धारा

तु धीरे धीरे चल

हे समय! प्यार मेरा मधुर हैं

रंग तरंग से हम जुड़ते हैं

आंख मिचौली से मिलते हैं

ख्याल ख्यालों में डूबते हैं

करना है मुझे इंतजार

समय की धारा

तु धीरे धीरे चल

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" यम द्वितीया "

सच में हम कितने भाग्यशाली है की हमारी संस्कृति में ऐसा दिन आता है 🙏

जीते जीते ऐसा दिन जो हमें ऐसे लोक प्राप्त हो जो आनंद और परमानंद ही प्राप्त रहे 🙏

हमारे आचार्यों ने - यम द्वितीया की जो अनुभूति पायी है वह हमें प्रसादी में लुटाई है।

हमारे शास्त्रों कहते है की जब मृत्यु के देवता 'यम 'हमें लेने या पकड़ने आये और जो हमने उनकी बहन यमुनाजी का स्मरण, स्पर्श और अपने तन मन धन जीवन में समाविष्ट किया हो तो हमारा स्वरूप 'यम पय पावक 'में परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन की अनुभूति यही तिथि हमें जबसे श्री सूर्य नारायण जैसे जैसे हमें अपने किरणों से यह नैन, मन, तन, धन, जीवन को अपनी उर्जा आच्छादित करता है तब तब यह तन मात्राएं विशुद्ध और पवित्रता से रसोद्बध हो जाती है और हम सदा के लिए उन्हें समर्पित हो जाते है। यही तनुनवत्व से हमारा आत्मा स्वयं परमात्मा की ओर गति करने लगता है।

इसलिए 'यम द्वितीया 'का महात्म्य अति निराला है। श्री यमुनाजी का भाई हमें देखकर अति आनंदित होता है।

इसलिए तो यह तिथि को भौतिक स्वरूप श्री यमुनाजी में स्नान करने का सौभाग्य है।🙏

" यम द्वितीया " का सामर्थ्य हमें प्राप्त हो ऐसी याचना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" प्रेम "

पवित्र - विश्वास और श्रद्धा का विशुद्ध स्त्रोत

जो केवल आत्मा और परमात्मा से ही होता है 🙏

हमारी द्रष्टि जहां जहां हो वहां वहां हम आत्मा से पहचाने तो अवश्य हर नज़र नज़र में परमात्मा ही दिखेगा 🌷🙏🌷

हे जीव! मुझमें इतना सामर्थ्य दे की मेरी हर द्रष्टि में आत्मा निहालु और हर आत्मा से परमात्मा पाऊं। 🌷🙏🌷

मेरे प्रेम में उपासना हो - साधना हो - दासत्व हो - परमतत्व हो।

न संशय हो - न संकोच हो - न स्वार्थ हो

केवल निर्दोष हो - निर्भय हो - निरलेप हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा कृष्ण मिलन 🌷🙏🌷

अनेक लोक व्याक्या

अनेक शास्त्रों की रचनाएं

अनेक भक्तों की कल्पनाएं

अनेक जगत की जागतिकाएं

अनेक अनुभूति की सच्चाइयां

अनेक भारत भूमि की कथाएं

अनेक आत्माओं की स्पंदनाएं

अनेक प्रेमीओं की आनंदायिकाएं

अनेक अवतारों की लीलाएं

राधा कृष्ण का प्रेम आज भी हर आत्म से निखरता है और हर कोई अपने आप में राधा कृष्ण को पाता है। 🌷🙏🌷

मेरे परम मित्र! आपने मुझे अनेक " राधा कृष्ण " प्रेम स्पंदनों से अभिभूत कर दिया 🌷🙏🌷

" राधे राधे " 🌷🪷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

फूल चुंट रहा था, जैसे फूल को पकड़ा फूल बोल उठा - अरे! मुझे मत चुंटो, मैं काबिल नहीं हूं - कोई पत्थर की मूरत के चरण के लिए।

मैं अचंभित रह गया - अरे! यह कैसा? मैंने अपनी आसपास देखा - मेरे शरीर को देखने लगा और नजदीकी झूला पर बैठ कर सोचने लगा। यह फूल अपने आप से कहा - 'मुझे न चुंटो, मैं कोई पत्थर की मूरत के काबिल नहीं हूं।'

हे मन! तु ही बता यह फूल में इतनी क्षमता कैसे आई?

और यह फूल न चुंटु तो उसका होगा क्या?

मेरा मनने कहा - तुम्हें कोई संकेत दे रहा है यह फूल, कहता होगा मैं इतना सुंदर, इतना रंग बिरंगी, मधुर महक वाला तो भी मैं श्री कृष्ण के काबिल नहीं हूं।

क्यूंकि मैंने मेरा खिलना समाज में रहते हर ऐसी व्यक्तिओं के लिए है की - मुझे देख कर समझे की सदा सुंदर रहो, रंग भरे रहो, मधुर रहो और सबको अपने आप में ऐसे बांटो की कोई भक्त हो, संत हो, ज्ञानी हो, विद्याधर हो जिसके गले का हार बनु, जिससे उन्हें मैं अपनी सुंदरता, रंग और महक न्योछावर कर के वह मेरा खिलने का उद्देश्य समझे।

उनके स्पर्श से मुझमें जो ऊर्जा जागेगी, उससे मैं कहीं फूल खिलाऊं और सृष्टि योग्य कर दूं। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कान्हा "
कान् + हा
कन्हाई
कन् + हाई
कन्हैया
कन् + हैया

कितने मधुर है हम!
कितने प्रेमी है हम!
कितने पागल है हम!
कितने गद गद है हम!

जन्म से मधुर
युवानी से प्रेमी
जीवन भर पागल
और
आखरी सांस तक गद गद

एक ही है ऐसा नाम
एक ही है ऐसा चरित्र
एक ही है ऐसी लीला
एक ही के है ऐसे काम

मेरा कान्हा! 🌷
मेरे कन्हाई! 🌷
मेरा कन्हैया! 🌷

सच! मुझे होना है मधुर 🙏
सच! मुझे पाना है हजूर 🙏
सच! मुझे करना है सुरुर 🙏
सच! मुझे करवाना है मंजूर 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं अपने आप पर लिखता हूं
क्या लिखूं क्या न लिखूं
हर अचंभित में रहता हूं
मैं अपना प्रमाणपत्र
अपने हाथों से लिखता हूं
मैं यह लिखूं की
मैं प्रामाणिक हूं
तो तन मन धन जीवन प्रमाण देते है
सच में तुम प्रामाणिक हो
न तन से रोगी
न मन से भोगी
न धन से लोभी
न जीवन से रागी
आगे एक पहली लिखूं
मैं एक दार्शनिक हूं
जो जो निहालता
वह वह सकारात्मक अपनाता
कुटुंब देखा
समाज देखा
दुनिया देखी
संसार देखा
कुटुंब से पाया मैंने साथ साथ रहना
समाज से पाया मैंने सत्य वचन निभाना
दुनिया से पाया मैंने अपना कुनबा बनाना
संसार से पाया मैंने हर सार में श्री प्रभु गुन गाना
सच में कैसी लीला है मेरे श्री प्रभु की
जो मैंने कृपा कृपा ही पायी
मेरा कर्तव्य है
मुझसे हर कोई हो सुखाकारी - आनंदधारी🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
हे प्रभु! मेरे अवगुण चित्त न धरो 🙏
मैं एक बालक जगत जगत जीना
संसार सेवा करु रुडी अपार
हे प्रभु! मेरे अवगुण चित्त न धरो 🙏
सम द्रष्टि से मुझे संवारो
मगन रहूं क्षण क्षण तु निहार
हे प्रभु! मेरे अवगुण चित्त न धरो🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे आत्म!
तु ही तु ही कृष्ण कृष्ण पुकार
किरण किरण पुष्टि जागती है
पुष्टि पुष्टि उर्जा प्रज्वलाव
मन तरंग स्थिर रहता है
तत्व मांही दीपक प्रकटाव
मन तरंग स्थिर रहता है
तु ही तु ही कृष्ण कृष्ण पुकार
किरण किरण पुष्टि जागती है

कृष्ण के स्मरण से तन मंदिर झुमे
कृष्ण के मनन से मन तरंग झुमे
रोम रोम कृष्ण ही यांचे
अंग अंग कृष्ण ही राचे
तन मन कृष्ण ही श्रृंगार
मन तरंग स्थिर रहता है
तु ही तु ही कृष्ण कृष्ण पुकार
किरण किरण पुष्टि जागती है

वल्लभ कृपा से ब्रह्म संबंध पामु
यमुना नमन से परब्रह्म सांधु
सांस सांस कृष्ण ही गाऊं
द्रष्टि द्रष्टि कृष्ण ही निहालु
घडी घडी कृष्ण ही जुहार
मन तरंग स्थिर रहता है
तु ही तु ही कृष्ण कृष्ण पुकार
किरण किरण पुष्टि जागती है

श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय
आचार्य श्री वल्लभाधीश की जय
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
तुम क्या हो?
हमारी संस्कृति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी प्रकृति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी वृत्ति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी श्रुति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी स्वीकृति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी जागृति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी कृति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी विश्रुती में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी प्रवृत्ति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी स्तुति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी प्रीति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी स्वाति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी भाती में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी जाति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी शांति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी ज्योति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी रति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी ज्ञाती में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी बाती में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी भ्रांति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी नेति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी सरस्वती में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी पनोति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी बस्ती में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी युति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी युक्ति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी मुक्ति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी क्षति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी मति में तुमने हमें क्या कर दिया
हमारी गति में तुमने हमें क्या कर दिया
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
कृष्ण तुम कहो 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी दीवानी मीरा हो गई

तेरी रुहानी राधा हो गई

तेरी कहानी गोपियां हो गई

तेरी निशानी द्रोपदी हो गई

तेरी कुर्बानी गीता हो गई

तेरी महारानी यमुना हो गई

तेरी ठकुरानी रुक्मिणी हो गई क

तेरी नंदिनी यशोदा हो गई

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

हे कान्हा!

सच में तु कितना प्रेमी है!

तु कितना मधुर है!

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरा नाम लिखते लिखते कृष्ण टेडा लिख दिया

मेरा नाम लिखते लिखते राधा सीधा लिख दिया

तु कृष्ण हो गई

मैं राधा हो गया

अक्षर अक्षर अपनी प्रेम कहानी हो गई

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

" हिन्दु संस्कृति "

कभी सुना है

इनकी सत्यता और सभ्यता को

इनकी सामर्थ्यता और सार्थकता को

इनकी श्रेष्ठता और उत्तमता को

इनकी निष्ठा और प्रमाणिकता को

इनकी विश्वसनीयता और पवित्रता को

गहराई से समझ पाये तो हिन्दु संस्कृति हमारे लिए ऐसा संस्कार सागर है जिसकी हर बूंद हमें पुरुषोत्तम कर सकती है।

भगवान श्री राम मर्यादा पुरुषोत्तम हुए

भगवान श्री कृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम हुए

कैसे?

यह संस्कृति की बूंद बूंद को सिंचा

हमें भी यह सिंचना है हमारे यही ही मन - तन - धन और जीवन से 🙏

हम हमारे पुरुषार्थ से हम यह योग्यता पाये 🙏

" नाम स्मरण से मुक्ति पाये " यह सूत्र को सिद्ध नाम स्मरण अर्थात

सत्य वचन - विश्वास और कर्म

पवित्र व्यवहार - त्योहार और व्यापार

विशुद्ध व्यवस्था - अवस्था और संस्था

नि:संदेह विचार - आचार और आकार

यही ही मूल धरोहर है हमारी

डोकटर हो - इन्जिनयर हो - स्नातक हो

हम पढ़े हैं - शिक्षाविद है तो विद्यावान अवश्य होंगे ही 🌷🙏🌷

दे दे वचन आज यह सृष्टि - प्रकृति और ब्रहमांड को

हम संवारेंगे - सजायेंगे - समायेंगे यह हिन्दु संस्कृति 🌷🙏🌷👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा तेरा नैन कैसा?

नज़र नज़र से रस बहावे

कान्हा तेरा मुखड़ा कैसा?

कंवल कंवल से तितली खिंचावे

कान्हा तेरी मुस्कान कैसी?

हंस हंस कर धड़कन दौड़ाएं

कान्हा तेरा रंग कैसा?

रंग रंग कर श्याम रंगाएं

कान्हा तेरा शृंगार कैसा?

तड़प तड़प कर अंग सजाएं

कान्हा तेरा चरण कैसा?

पसार पसार कर सेवा जगाएं

कान्हा तेरी पायल कैसी?

थिरक थिरक नाच नचाएं

कान्हा तेरी बंसरी कैसी?

गूंज गूंज कर दिल चुराएं

हे कान्हा!

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा तेरा नैन कैसा?

नज़र नज़र से रस बहावे

कान्हा तेरा मुखड़ा कैसा?

कंवल कंवल से तितली खिंचावे

कान्हा तेरी मुस्कान कैसी?

हंस हंस कर धड़कन दौड़ाएं

कान्हा तेरा रंग कैसा?

रंग रंग कर श्याम रंगाएं

कान्हा तेरा शृंगार कैसा?

तड़प तड़प कर अंग सजाएं

कान्हा तेरा चरण कैसा?

पसार पसार कर सेवा जगाएं

कान्हा तेरी पायल कैसी?

थिरक थिरक नाच नचाएं

कान्हा तेरी बंसरी कैसी?

गूंज गूंज कर दिल चुराएं

हे कान्हा!

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितना अनोखा प्रेम है

आज भी राधा बैठी है निकुंज में

कितना अतुल प्रेम है

आज भी कान्हा बैठा है कुंज गली में

कितना मधुर शृंगार है

आज भी राधा सजी है रास रचे

कितना सुरीला रव है

आज भी कान्हा बंसरी बजाता है

कितनी अदभुत अटखेलियां है

आज भी राधा रुठी है

कितनी अलौकिक अदा है

आज भी कान्हा राधा को मनाया है

हे राधा!

हे कान्हा! 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तन सोंप दिया

मन सोंप दिया

आत्मा लुटाई दी

तेरे प्यार में

नज़र नज़र मिलाई दी

रंग रंग एक रंग लि

अंग अंग जोड दी

तेरे प्यार में

कुछ और नहीं अब यह जीवन में

तुमसे ही प्रेम निभाना है

प्रेम प्रियतम तुम हो

क्या काम है भगवान की

इसलिए तो तुम राधा हो

मैं हुं एक दीवाना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

हे प्रभु जागो! हे प्रभु प्रबोधो!

कहीं अंधकार से भरे हमारा जीवन

क्षण क्षण संशय पल पल बतंगड

ज्ञान दीपक प्रकटा कर जगाओ

ध्रुव प्रह्लाद नरसिंह अहिल्या जागी

तन मन धन जीवन माया त्यागी

तुम ही हमारे प्रेम आत्म स्वामी

ज्ञान दीपक प्रकटा कर जगाओ

अनुकरणीय द्रष्टि हमारी अशुद्धि

जगत जगत मानव मति निरर्थक

नज़र नज़र अंधेरा मन मन बेसहारा

ज्ञान दीपक प्रकटा कर जगाओ

तिथि प्रबोध हमारी भक्ति अबोध

हमरा जीवन प्रमोद जगाओ सुबोध

तेरा ही एक आसरा तु ही जीवन सवेरा

ज्ञान दीपक प्रकटा कर जगाओ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आली रे मोंहे लागे वृंदावन नीको

लागे रे मोंहे नीको भाये रे मन जीको

रज रज में मेरे श्याम बसे हैं

कण कण में राधा प्रेम छुपा है

हर कोई उनके दीवाने

भटके गली गली नाचें

आली रे मोंहे लागे वृंदावन नीको

कुंज कुंज में राधा बसी है

वन वन में प्रेम लीला जगी है

हर कोई गाये प्रेम तराने

पाये मधुर मिलन अफसाने

आली रे मोंहे लागे वृंदावन नीको

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा "

और नहीं कुछ लिख सकता हूं

और नहीं कुछ कह सकता हूं

और नहीं कुछ सुन सकता हूं

जबसे एक बार लिखा

जबसे एक बार कहा

जबसे एक बार सुना

मेरा मन स्थिर हो गया

मेरा तन नूतन हो गया

मेरा जीवन प्रेम हो गया

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

बार बार कहे हम
मुझे जाना है उस पार

अभी जहां हूं उससे
मुझे जाना है उस पार

मैं कहां हूं वह किसे पता
मुझे जाना है उस पार

यही जाने मैं हूं कोई आर
मुझे जाना है उस पार

मैं खड़ा कुटुंब साथ यह पार
मुझे जाना है उस पार

संवारुं ऐसा हर साथ साथ
मुझे जाना है उस पार

मित्र स्नेही रोके बार बार
मुझे जाना है उस पार

जन्म जीवन ऐसा संसार
मुझे जाना है उस पार

काम क्रोध मोह प्यार
मुझे जाना है उस पार

धर्म रीति रिवाजों आडंबर
मुझे जाना है उस पार

न कोई आकार न साकार
मुझे जाना है उस पार

कौन किसका नहीं खबर
मुझे जाना है उस पार

ज्ञान विद्या अंजान संस्कार
मुझे जाना है उस पार

हे प्रभु! कैसी है पहेली पुकार
मुझे जाना है उस पार
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी यादों को

तेरे ख्यालों को

घुलते घुलते

ऐसा प्यार जताऊं

ऐसा प्यार संवारुं

तेरे नैन दौडी जाये

तेरी नज़र तरसती जाये

तेरे अधर थरथरे जाये

तेरा मुखड़ा तड़पता जाये

कहदो तो ख्वाबों में आऊं

कहदो तो आयना में निहारुं

तेरे सामने मैं प्रकट हो जाऊं

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

समय समय को जो समझे

वही सच्चा ज्ञान

समय समय ही मूल धारा

अविरत बही जाय

समय समय पर कदम बढाये

मंजिल नजदीक आय

समय समय पर धर्म आचरे

जीवन मधुर सोहाय

समय समय पर रंग बिखराये

कर्म फल हरखाय

समय समय की ही योग्य परख

मानव देव पूजाय

समय समय ही हमारा साथी

हर हर साथ निभाय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सवेरे शाम हम दौड़ते रहे

रात हम ज्ञान प्रेम में रहे

यही दिन भर की जबान

मासिक आशिंक कुटुंब निभाये

बार मासिक समाज में बिखराये

यही साल भर की कहान

वर्ष साल दशक अर्थोपार्जन डूबे

दशक दशक दुनिया में जुटे

यही दशकों की चट्टान

उम्र भर की आखरी पडावें

उम्र भर के गुण गान गाये

यही उम्र की पहचान

कैसा जन्म कैसा जीवन

नया जनम नई भांते

यही जनम की शान

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज देखता है

चंद्र भी देखता है

धरती भी देखती है

की हम कितने तुम्हारे लिए तरसते है

आकाश के बादलों भी बरस बरस कर कहते है

हे राधा! तु कितनी तरसी है तेरे प्रिये की

तेरा काजल बह गया

तेरी पायल डूब गई

तेरा आंचल चूर गया

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

तेरी कैसी अनोखी प्रीत

जो जो भी देखे वह दीवाना हो गया

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रेम

प्रेम

ओहहह! अदभुत

कुछ भी करुं

प्रेम जागे

कुछ भी सोचे

प्रेम

कहां भी हूं

प्रेम

कैसा भी हूं

प्रेम

हे कान्हा! मैं जहां तु वहां

रग रग में तुम

रंग रंग में तुम

तुम तुम और तुम

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

बस यही हाल में हूं 🌷 🙏 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

पुष्टि पुष्टि करते हुए वैष्णव हुए

ब्रह्मसंबंध से श्री श्रीवल्लभ के हुए

विश्रामघाट पान से श्रीयमुना के हुए

व्रज परिक्रमा से श्रीगिरिराज के हुए

नाथद्वारा दर्शन से श्रीनाथजी के हुए

" जय श्री कृष्ण " करते पुष्टि सृष्टि के हुए

" श्री कृष्ण: शरणं मम " करते श्रीकृष्ण के हुए

ऐसा है पुरुषार्थ हमारा जो धन्य हुए

ऐसी है सेवा हमारी जो पुष्टात्मा हुए

ऐसा है ज्ञान हमारा जो पुष्टि दास हुए

ऐसा है भाव हमारा जो पुष्टि सखा हुए

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!
तु धरती पर कैसे हो सकता है?
तु आसमां पर कैसे हो सकता है?
तु सागर में कैसे हो सकता है?
तु सूरज में कैसे हो सकता है?
तु वायु में कैसे हो सकता है?
ओहहह!
न तु धरती न तु आसमां
न तु सागर न तु सूरज
न तु वायु तो तु कहां हो सकता है?
मंदिरों में नहीं पाया
शास्त्रों में नहीं पाया
ज्ञान में नहीं पाया
भाव में नहीं पाया
अगर तु होता तो कोई तो सुंदरता
न वक्ता तुम्हें पाये न श्रोता तुम्हें पाये
हर कोई बड़ी बड़ी बातें करें
और पाये शौहरत, नाम, वैभव, समृद्धि, मिलकत, धन, दौलत, रंग राग ऐश्वर्य - जहां भी तु नहीं
तो सब क्यूं ऐसे ही ढूंढते?
कमाल हो गया? जो सब जानते है तु ऐसे में कहीं नहीं तो भी तुम्हें इसलिए ही पुकारें - उपयोग करें!
ओहहह! तो भी तु नहीं?
हे कान्हा! तु बता तु है कहां?
तुने अवतार लिए तो भी न समझे?
तो तो अवश्य तु कहां है यह ऐसे व्यक्ति कैसे कहें और बताये?
आप कहें 🙏 कहां है कान्हा?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सपनों में राधा रानी
ख्वाबों में राधा रानी
मन में राधा रानी
दिल में राधा रानी
कर्म में राधा रानी
धर्म में राधा रानी
खुशी में राधा रानी
दु:खी में राधा रानी
हंसी में राधा रानी
रोने में राधा रानी
आनंद में राधा रानी
विरह में राधा रानी
मिलन में राधा रानी
हे राधा रानी! तु हर हर
तु जर जर तु पर पर
तुमसे मेरी कहानी
तुमसे मेरी निशानी
तुमसे मेरी यारानी
तुमसे मेरी सुहानी
मैं तुम्हें व्रज भूमि पर पाऊं
मैं तुम्हें वृंदावन रज में ध्याऊं
मैं तुम्हें निधि निकुंज में पाऊं
मैं तुम्हें श्री हरिवंशजी से जानु
मैं तुम्हें श्री हरिदास जी से स्पर्शु
राधा राधा
राधा राधा
राधा राधा
🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी जागी हूई उर्मि

जब तु जो भी शब्द से लिखती है

वह शब्द मेरे प्यार की वसीयत है

वह शब्द की असर

मेरे प्यार की महक है

वह शब्द से मुझमें जागी उर्मि

हमारे प्यार की तपस्या है

तेरे प्यार की उर्मि मेरे प्यार की उर्मि

हमारे मधुर जीवन की आहूति है

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हे राधा! तु कहीं भी हो कैसी भी हो

तेरा कान्हा भी तु है तेरे जैसा ही है

🌷🙏🌷🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

उडाया है आंचल

कोई सृष्टि रचने को

अगर है कोई कृष्ण

थाम लें यह आह्वान

हिन्दुस्थान की है नारी

जब लहराया आंचल

अवश्य कोई जागेगा

अवतार वीर परमात्मा

संरक्षेगा आंचल तार तार

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" विस्फुलिंगा इवाग्नेर्हि जडजीवा विनिर्गता: ।

सर्वत: पाणिपादान्तात्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखात् । "

जीव अणु है। जीव जैसे प्रज्वलित अग्नि में से विस्फुरण होते अनेक पदार्थ व्युच्चरण पाते हैं वैसे ही जीव ब्रह्म से व्युच्चरण पाते है और वह जगत के धर्म से जुड़े विचरता रहता है।

अति गहनता से स्व पहचान से अध्ययन करें तो हमें अवश्य यही ही अवस्था की भूमि समझ आती ही है। हम क्या है?

इसलिए तो जगत में बार बार गति करते रहते है जबतक स्व पहचान हो।

यह पहचान के लिए ही श्री वल्लभाचार्यजी ने ब्रह्म संबंध का प्रायोजन किया। जिससे जीव को समझ आये स्व एक जड़ जीव है, जिसे ब्रह्म संबंध की दिक्षा से यह शिक्षित किया जाता है - हे जड जीव तु ब्रह्म से व्युच्चरण होते हुए यह जगत में है और यही जगत में अनेकों पुरुषार्थ करते स्व गति करनी है जिससे तु ब्रह्म में एकात्म हो।

अदभुत श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

दंडवत प्रणाम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

भाष्य पुष्पांजलि: श्रीमदाचार्यचरणाम्बुजे।

निवेदितस्तने तुष्टा भवन्तु मयि ते सर्वदा।।

हमारे आचार्य - हमारी संस्कृति - हमारे संस्कार इतने अदभुत और सार्थक है की जब भी कोई भक्त - संत - ऋषि - मुनि या सेवक दासत्व से करेल अर्थ - विवेचन - टिका या विवरण वह मूल रचनाकार की आज्ञा, सामर्थ्य और प्रेरणा से ही है - एक सेवक या दास के भांति मैंने यह निवेदन किया है।

संस्कार का कितना अनोखा पालन 🙏

हे श्री वल्लभाचार्यजी! आपने जो जो भी प्रेरणा मुझमें जगाई है और जगाते हो। 🙏 आप के चरणों में सर्वथा समर्पित 🙏

श्री विठ्ठलनाथजी रचित उपरोक्त कारिका हमें अदभुत आज्ञा करती है।🙏

हे जगतात्माएं! आपको आत्मीय नमन - प्रणाम - वंदन 🙏

आपके चरणोंकमलो में सर्वथा समर्पित 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक चिंतक थे, वह हर अक्षर और शब्द को इतने फलसफा से समझते थे और कहते रहते थे।

एक दिन किसीने उन्हें पूछा - हे चिंतक! आप हर अक्षर और शब्द को फलसफा की अनुभूति से समझते हैं और कहते रहते हो।

तो मुझे एक जिज्ञासा है - आप अवश्य समझ भी सकेंगे और कह भी सकेंगे 🙏

जिज्ञासु व्यक्ति ने पूछा - प्रेम क्या है?

चिंतक उनका न उत्तर दे पाये और नमन करके प्रस्थान पा गये।

वह जिज्ञासु सोचने लगा - यह कैसे संभव है - जो व्यक्ति इतना सामर्थ्य धराता है और हर उनके चिंतन और मनन में आध्यात्म की उंचाई जता रहे हैं तो यह जिज्ञासा प्रश्न का उत्तर नहीं दे सके!

कहीं दिन हो गए - वह उत्तर नहीं दे सके और वह जिज्ञासु को कहा भैया! आपका प्रश्न का उत्तर पाने के लिए मुझे नया जन्म धरना पड़ेगा 🌷🙏🌷

आप इसका उत्तर अपनी कक्षा से दे सकते हो तो अवश्य हमें मेरा मोबाइल नंबर ९३२७२९७५०७ पर अवश्य दे 🙏

यह प्रश्न आत्मीय और आध्यात्मिक चिंतन आधारित ही है 🌷🙏🌷

इसमें न तो स्त्री या पुरुष की उल्फत क्रिया से द्रष्टि पात करना है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" घनश्याम "

घुमड घुमड़ कर निल गगन में ऐसे घने बादल बिखरने लगे की सारा गगन घनघोर घन घन घटाओं से घनश्याम हो गया।

गोपियां अपने काजल भरे नैनों से गगन की ओर तीव्र गति से नजर दौड़ाएं घनघोर घटाएं अपने रुप में और घनता फैलाये घन घन वातावरण को अधिक घनश्याम कर रही थी।

गौचारण से खर खर डग भरती गौएं से उड़ती व्रज रज धरती पर चकरी हो कर चारों ओर बिखरती बिखरती घट घट घनश्याम कर रही थी।

गोप बालकों अपने अपने गौ धन को गौ स्थली को डहक डहक के स्वर संकेत कर घटाओं को साथ देते देते घनश्याम कर रही है।

हे घनश्याम! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हां! कितनी मधुर और अनोखी प्रेम लीलाएं है श्री राधा और श्री कृष्ण की।
कोई एक स्मरण करें तो अनेकों विशुद्ध प्रेम और पवित्र व्यवहार जागे।
कभी श्री राधा के दरश पाये तो अनोखा
कभी श्री कृष्ण के दरश पाये तो अनोखा
हर एक की रीत निराली।
उम्र के छोटे हो
उम्र के युवा हो
उम्र के बड़े हो
उम्र के कोई भी पडाव पर हो
कोई असर कोई कल्पना
कोई आनंद कोई विरह
बस! सदा तरसते और तड़पते
कोई गूंज सुने कोई वार्ता सुने
कोई सत्संग सुने कोई कीर्तन सुने
हर सुर में कोई उर्मि तो कोई तीव्रता
कहीं भी हो कैसे भी हो
साथ हो या अलग हो
निकट हो या दूर हो
पर असर असर और असर में डूबे हुए
कुछ कहे तो राधा
कुछ सुने तो कृष्ण
कुछ लिखे तो राधा
कुछ पढे तो कृष्ण
कुछ सोचे तो राधा
कुछ करें तो कृष्ण
हम कैसे निराले
हम कैसे बेचैन
हम श्याम रंगे
हम शृंगार सजे
हम गुन गुने
हम ख्याले ख्याले
हम रंजे भजे
हम उमंगे अभ्यंगे
केवल राधा केवल कृष्ण 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
हे राधा! 🌷🙏🌷
हे कृष्ण! 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

भाई! मैंने मनुष्य जन्म पाया, तुमने मनुष्य जन्म पाया?
अरे! मैं मनुष्य हूं तब तो तुम मुझे कह रहे हो।
ओहहह! तुम भी मनुष्य!
पर तुम तो अपने आपको समझते हो और पहचानते हो?
अरे! यह कैसा प्रश्न? तुम अपने आपको समझते हो - पहचानते हो, तो मैं भी अपने आपको समझता हूं और पहचानता हूं।
भाई! मैं तो सत्य वचनी, सत्य आचरणीय, सत्य जीवनीय।
ओहहह! तो मैं भी सत्य वचनी, सत्य आचरणीय और सत्य जीवनीय।
अर्थात जो मैं हूं वह तुम भी हो।
अवश्य।
अच्छा तो यह जो जीवन तु जी रहा है, यह सुख भरा है?
बिलकुल सुख भरा जी रहा हूं। देखो!
मेरी पास घर है, कुटुंब है, गाड़ी है, धन है और व्यापार है। मैं अपना निर्वाह आनंद से कर रहा हूं।
वाह! तुम सच में सही जीवन जीते हो और सुखी हो।
मैं सदा श्री वल्लभाचार्य प्रस्थापित पुष्टि मार्ग सिद्धांत से स्व को और सारे कुटुंब को शिक्षित और संस्कार सिंचित कर आत्मनिर्भर करता हूं।
वाह! यह सिद्धांत शिक्षित कैसे करते हो?
सिद्धांत के लिए नियम बद्ध प्राथमिक षोडश ग्रंथ की हर रचना को समझते समझते सत्संग करके श्री वल्लभाचार्य को दंडवत करते हैं।
🌷🙏🌷 सुंदर
हां! सदा सकारात्मक विचार और कार्य में निपटे रहना। स्नातक हुए विषयों में नियमन और संचालन प्रमाणित धन कमाना।
ओहहह! 🌷🙏🌷
एक बात पूछूं?
अवश्य!
ऐसा तो सभी कहते फिरते हैं, और अपने मानस से धन्य समझते हैं।
हे भाईजी! कल बात करे? 🌷🙏🌷
चोक्कस
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अक्षर अक्षर टकराये ऐसे

विचार विचार मिलजुले ऐसे

शब्द शब्द असर हो गये

ऐसे असर ऐसे विचार

ऐसे शब्द से एक धून गूंजी

जो अधर की थरथराहट से

बंसरी के साज से ऐसी बही

पायल खनकती कहने लगी

हे कान्हा! ऐसा क्या छेड़ दिया

मैं दौड़ी चली आई सुधबुध खोई

मैं तड़पती हो गई तेरी धून सुन के

दीवानी हो गई तेरी मधुर तान से

हे कान्हा!

मैं एक गोपि तुने तुझमें डूबो दी

खड़ी खड़ी तेरे प्रेम में भिगो दी

कैसे जाऊं अब बरसाना के तीर

तेरे प्यार में बरसे अविरत नीर

दूर दूर से तु गाये प्रेम तराने

न मैं डग पाऊं मेरे घर ठिकाने

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"श्री कृष्ण के सखाएं "
"श्री राधा जी की सखियां "
गहराई से सोचें
हमारे जीवन के सखाएं
हमारे जीवन की सखियां
सखा - जो हर तरह से समान हो
सखि - जो हर तरह से समान हो
सखा - जो हर दासत्व से सेवक हो
सखि - जो हर दासत्व से सेविका हो
अरे! श्री कृष्ण कभी सेवक थे?
हां! वह सदा के सेवक हैं और थे।
उनकी हर सेवा को समझें तो हर क्रिया उनकी सेवा है और थी।
बचपन - गांव की सेवा
बालक - गौएं की सेवा
युवक - गौचारण की सेवा
युवराज - राज्य की सेवा
राजा - देश की सेवा
पुरुषोत्तम - जगत की सेवा
परब्रह्म - सर्वे की सेवा
अरे! श्री राधा जी कभी सेवक थी?
हां! वह सदा सेविका है और थी।
उनकी हर लीला सेवक ही की है और थी।
बचपन - अनेक ऋषि मुनियों की सेवा
बालक - अनेक दु:खीओं की सेवा
युवा - अनेक सृष्टि और प्रकृति की सेवा
रानी - अपने प्रियतम की सेवा
महारानी - अपने गोलोक ब्रह्मांडो की सेवा
प्रिया - प्रिय पुरुषोत्तम की सेवा
विरहणी - परब्रह्म पूर्ण प्रेम की सेवा
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वैश्वानर "
कौन है?
हम बार बार शास्त्रों में
हम बार बार प्रवचनों में
हम बार बार कथा में
हम बार बार सत्संग में
सुनते हैं - वैश्वानर
कौन है यह वैश्वानर?
हम सुनते हैं - परमात्मा
हम सुनते हैं - इश्वर
हम सुनते हैं - भगवान
गहरी समझ से कहें हमारे आचार्यों - वैश्वानर है
जो आचार्य सारी सृष्टि के ऐसे खाद्य आरोगे जिससे विशुद्धता हो, जिससे योग्यता हो, जिससे पवित्रता हो, जिससे अज्ञान नष्ट हो, जिससे संस्कारों का संस्थापन हो। वह वैश्वानर है।
श्री शंकराचार्य
श्री रामानुजाचार्य
श्री माध्वाचार्य
श्री निंम्बाकाचार्य
श्री वल्लभाचार्य
यह हमारी संस्कृति के वैश्वानर है।
जो भक्त यही संस्कारों का सिंचन करे वह भी यही कक्षा पर पहुंच सकते हैं।
जैसे विदुर जी
जैसे सूरदास जी
जेसे मीराबाई
जैसे सती अनसूया
जैसे भक्त प्रहलाद
🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

भारत के लोग बहोत ही आध्यात्मिक चिंतन, विचार विमर्श करते हैं और अपने आपको संतुष्ट करते रहते हैं।

जैसे जीवन जीने की व्यवस्था और सैद्धांतिक शैली का आयोजन करना होता है तो वह गरीब, मध्यम वर्गीय, परिस्थितियां और कोई न कोई बहाना बनाकर अपना जीवन यापन करता रहता हैं। ज्यादातर निठल्ला रह कर मुफ्त में क्या मिल रहा है या पा सकते है, उसके आयोजन में ही व्यस्त रहते हैं।

कुछ मिला तो स्व को महान बताते रहते है और न मिला तो ऐसा और वैसा।

कोई प्रगतिशील या सफल जीवन शैली जी रहा होता है उनसे न सीखना और समझना होता है। ऐसी सफलता पर ज्यादा लोग कहते रहते है

उनका नसीब

उनके परिवार ने बहोत कुछ जमा करके रखा था

ऐसा था - वैसा था

पता नहीं क्यूं इतनी नकारात्मकता

आपका क्या विचार है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कमाल है हम - अदभुत है हम - अनोखें है हम

" मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तुम्हारे आऊं "

जो भी सूफी ने कहा है - कितना सटीक सत्य है

और हम भटकते रहते हैं डगर डगर गली गली चौखट चौखट चौराहे चौराहे आंगन आंगन

कौन सच्चा! तो क्यूं न ऐसा रहना!

मैं चोर तु चोर

मैं सीनाजोरी तु सीनाजोरी

मैं लुटारुं तु लुटारुं

मैं अज्ञानी तु अज्ञानी

कैसे न रहे जोडी सदा एक हमारी

कौन दूध धोये कौन शुद्ध

हम ही प्रमाणित हम ही नियामक

ओहहह! तो कैसे होगी हमारी शुद्धि?

तो तो गाता रहूं सुनाता रहूं

मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तुम्हारे आऊं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सत्संग की उर्जा ऐसी है

हममें है श्री प्रभु

हर एक में है श्री प्रभु

अर्थात हर हर में श्री प्रभु

तो हमारी चादर मैली क्यूं?

हमारी चादर हमारे मन से है

हमारी चादर हमारे कर्म से है

हमारी चादर हमारी तन मात्राएं से है

हमारी चादर हमारी संस्कृति से है

हमारी चादर हमारे संस्कार से है

हमारी चादर हमारे धर्म से है

हमारी चादर हम जितनी शुद्ध रखेंगे

तो हमारे सामने जो जो भी है और मिलते हैं उनकी चादर शुद्ध है तो हम उन्हें क्यूं मैली करें?

हमें ऐसा तैयार होना है की हमारी चादर शुद्ध हो और औरों की शुद्ध चादर से हम भी सलामत - सब सलामत

सूफी की गहरी समझ हमें योग्यता के संकेत करता है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" आठहुं सिद्धि नवों निधि कौन सुख

नंद की धेनु चराय बिसारो "

" व्रजरज उडि मस्तक लगे

मुक्ति मुक्त है जाए "

मुझको सुख की कछु चाह नहीं

दुःख नित्य नवीन उठाना पडै "

व्रजभूमि के बाहर, किंतु प्रभो!

हमको कभी भूल न जाना पडै "

हे श्याम! हे कान्हा! हे गोपाल! हे गोविंद! हे कृष्ण! हे मोहन!

हमको कभी न बिसराना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कहत कबीर

" प्रभुता से लघुता भली, प्रभुता से प्रभू दूरी।

चींटी लै सक्कर चली हाथी के सिर धूरी "

" मन बनिया बनिज न छोड़े।

जनम जनम का मारा बनिया,

कबहूं पूर न तौले "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी मेरी पहली मुलाकात
तुमने मुझे कहां
तुम्हारा नाम क्या है?
मेरा क्या नाम है? अरे मेरा क्या नाम है?
भूल गया - भूल गया - मेरा क्या नाम है?
ओहहह! तुम तुम्हारा नाम भूल गए तो मुझे कैसे याद रखोगे?
तेरे नाम से मेरा नाम जुड़ जाये तो तेरा नाम मेरा नाम 👍

अच्छा यह बताओ तुम्हारा नाम क्या है?
मेरा नाम!
हां! तुम्हारा नाम?
वो तो मैं भूल गई
तुम बतादो?
बतादु?
हां हां बतादो?
ओहहह! तुम्हारा नाम!
वह भी मैं भूल गया।

नाम नाम में खो गये
हम दोनों का प्यार

तु मेरा नाम रखले
मैं तेरा नाम रखलुं
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
याद आ गया मेरा नाम और काम
मेरा काम माखन चोरी करना और मेरा नाम - दीवाना
वृंदावन कहे - राधा का परवाना
गोकुल कहे - गोपि का रखवाला
बरसाना कहे - किशोरी का तड़पाना
मथुरा कहे - यमुना का नजराना
🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

हे कान्हा!

शब-ए-इंतजार आखिर

कभी होगी मुख्तसर भी

इंतज़ार इंतज़ार और इंतज़ार

यह नैन यह नज़र यह मन

बस यूं ही स्थिर है

एक आश लिए

'कभी होगी मुख्तसर भी '

कभी भी हो जायेगा तेरा दर्शन

कभी भी नजर आ जायेगी तेरी झांकी

कभी भी पूर्ण हो जायेगा यह इंतज़ार का दीदार

कभी भी हो एक हो जायेगी यह आत्मा की ज्योति

जल रहा है प्रेम का दीपक तेरे साथ जलते जलते

अवश्य होगी तेरी मुख्तसर

अवश्य होगा तेरा दीदार

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

गहराई से चिंतन करता हूं - " पुष्टि मार्ग "

जगत में कोई धर्म या संप्रदाय का नाम मार्ग शब्द से जुड़ा हो।

मार्ग - मार्ग किसे कहते है?

मार्ग उसे कहते है जो सब चलते है।

ध्यान से समझे मार्ग पर कौन चलते है?

जो मार्ग को समझें।

जो मार्ग लक्ष्य तक पहुंचाये।

जो मार्ग स्व मंजिल तक पहुंचाये।

जो हमने थामा है वह मार्ग हमें अपना लक्ष्य तक पहुंचायेगा यह विश्वास और श्रद्धा के साथ थामा है।

" मार्ग " श्री वल्लभाचार्यजी ने यह नाम सिद्धांतों और शिस्तता से नामकरण किया है।

हम बार बार " पुष्टि मार्ग " " पुष्टि मार्ग " बोलते रहते है - करते रहते है, पर कभी यह नामकरण का अध्ययन किया है?

जो यह नाम का अर्थ समझे वही " पुष्टि मार्ग " का सामर्थ्य समझ सकता है।

ऐसा सामर्थ्य श्री अष्टसखाओं में था।

ऐसा सामर्थ्य श्री गोपियों में था।

अष्टसखाओं के चरित्रों से भी हम समझ सकते है मार्ग का अर्थ।

" मार्ग " अनोखा है

" मार्ग " विशेष है

" मार्ग " उत्तम है

मार्ग का व्याकरण अर्थ है - मृग यते अर्थात शोध - जो शोधता है वह स्व वह पगदंडी पर चलता है - जब यही पगदंडी पर हर कोई चलने लगता है तो वह मार्ग हो जाता है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा की प्रीति प्यारी

राधा की गति न्यारी

राधा की रीति निराली

राधा की ज्योति विराली

राधा की मति सांवरि

राधा की निति बावरी

राधा की रति वरणी

राधा की यति धरणी

राधा की श्रुति बंसरी

राधा की वृत्ति शरणी

राधा! हे राधा! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पंछी बनूं तो मैं मयूर हो

फूल बनूं तो मैं पंकज हो

बादल बनूं तो मैं घटा हो

वनस्पति बनूं तो मैं बंसरी हो

पशु बनूं तो मैं गाय हो

कीटक बनूं तो मैं भंवर हो

पर्वत बनूं तो मैं नीलांचल हो

नदी बनूं तो मैं सरस्वती हो

सागर बनूं तो मैं क्षीरसागर हो

सुर बनूं तो मैं सूरज हो

असुर बनूं तो मैं मुर हो

अपंग बनूं तो मैं कुब्जा हो

रज बनूं तो मैं व्रज हो

रेणू बनूं तो मैं रमणरेती हो

किरण बनूं तो मैं दीपक हो

काव्य बनूं तो मैं सुबोधिनी हो

संगीत बनूं तो मैं पायल हो

रंग बनूं तो मैं श्याम हो

हे प्रभु! मेरी ऐसी ही गति हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अप्रमक्ता "

ओहहह! प्रभु मुझमें मेरी योग्यता प्रदान हो 🙏

मैं कैसे जी रहा हूं - मुझे सीखना है 🙏

मैं कैसे सांस ले रहा हूं - मुझे समझना है 🙏

मैं कैसे द्रष्टि करुं - मुझे जानना है 🙏

मैं कैसे सुनूं - मुझे समझना है 🙏

मैं कैसे कहूं - मुझे पहचानना है 🙏

मैं कैसे डग भरुं - मुझे जानना है 🙏

हे प्रभु! मुझे अपने आप को पहचानने की कृपा करें 🙏

🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा! तुम से प्रीत तुम से गीत

कान्हा! तुम से निति तुम से रीति

कान्हा! तुम से रास तुम से संगीत

कान्हा! तुम से यारी तुम से दोस्ती

कान्हा! न तुम से वृत्ति न तुम से कृति

अगर मैं तुममें हूं तो सदा दास तुम्हारा

अगर तुम मुझमें हो तो सदा कृपा तुम्हारी

🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बजायेजा बजायेजा बजायेजा

बंसरी की तान रे

बजायेजा बजायेजा बजायेजा

बंसरी की तान रे

तेरे प्रेम की धून रे

कहें मुझे मेरा मीत रे

हे जीवन के राही

तु मेरा संगीत रे

बजायेजा बजायेजा बजायेजा

बंसरी तान रे

बजायेजा बजायेजा बजायेजा

बंसरी तान रे

तु दूर है कहीं पर

तु सदा साथ है हर पल

हे आत्म के आराधी

तु मेरा ही राह बर

बजायेजा बजायेजा बजायेजा

बंसरी तान रे

बजायेजा बजायेजा बजायेजा

बंसरी तान रे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाथ द्वारे

नाथ दर्शने नाथ शरणे नाथ स्मरणे

डग डग भरे डग डग धरे डग डग चरणे

नजर नजर नाथ स्वर स्वर नाथ डगर डगर नाथ

जप जप नाथ भज भज नाथ रज रज नाथ

नाथ द्वारे

सांस सांस नाथ नयन नयन नाथ गूंज गूंज नाथ

हर हर नाथ नर नर नाथ चर चर नाथ

नाध द्वारे

नमन नमन नाथ वंदन वंदन नाथ प्रणाम प्रणाम नाथ

दंडवत दंडवत नाथ व्यक्त व्यक्त नाथ भक्त भक्त नाथ

नाथ द्वारे

संग संग नाथ रंग रंग नाथ सत्संग सत्संग नाथ

जग जग नाथ ब्रह्म ब्रह्म नाथ आतम आतम नाथ

नाथ द्वारे

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति कितनी अलौकिक है
हमारे संस्कार कितने सर्वोत्तम है
हमारा आध्यात्मिक कितना सत्य है
की हम जन्म - जीव और जीवन से पुरुषोत्तमता पा सकते हैं
हमारा आकाश
हमारी धरती
हमारा सूर्य
हमारा चंद्र
हमारा वायु
हमारा सागर
हमारी प्रकृति
हमारी द्रष्टि
हमारी सृष्टि
हमारी पुष्टि
हमारा ज्ञान
हमारा विज्ञान
हमारा ध्यान
हमारा पान
हमारा अन्न
हमारा धन
हमारा धर्म
हमारा जन्म
हमारा जीवन
हमारा पण
हमारा वर्ण
हमारा स्पंदन
हमारा तन
हमारा मन
ओहह! हर घड़ी - सांस - स्वर - विचार - ख्याल - स्पंदन - क्रिया योग्य योग्य तो हम सर्वोत्तम -
परमोत्तम - पुरुषोत्तम 🌷🙏🌷
अद्भुत - अखंड - अद्वैत
" Vibrant Pushti"
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हरिराय से हरि दास जगाये

जन जन पुष्टि प्यास जगाये

पद पद जीवन सिद्धांत खिलाये

पुष्टि संस्कार हर मन मन जगाये

एक चरित्र पुष्टि संस्कार जगाये

भव भव के सारे बंधन छुडाये

हरिराय हरि चित्त गुन बताये

पुष्टि पुष्टि से सारा जीवन महकाये

हे हरिराय जी! आपको दंडवत प्रणाम 🙏

हरि के हरि दर्शन आज

भाव प्रीति से कीर्तन आज

पद पद पुष्टि उड़े रंग आज

गृहे गृहे बिराजें हरिराय आज

भक्ति संगति चरण स्पर्श गति

अंतर अंतर हरिरायजी संग जागे आज

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धन चाहिए
धान्य चाहिए
सुख चाहिए
समृद्धि चाहिए
दौलत चाहिए
मिलकत चाहिए
रुप चाहिए
जरझवेरात चाहिए
नाम चाहिए
रुआब चाहिए
रुतबा चाहिए
विद्या चाहिए
ऐसों आराम चाहिए
संपत्ति चाहिए
आदान प्रदान चाहिए
मान मरतबा चाहिए
वंश वेला चाहिए
अंग उपांग चाहिए
राज रत्न चाहिए
सत्ता चाहिए
सन्मान चाहिए
राग रागिनी चाहिए
गीत संगीत चाहिए
जल कपट चाहिए
रक्षा सुरक्षा चाहिए
भव्यता चाहिए
ओहहह क्या क्या चाहिए!
कभी यह सोचा मुझे निखालसता चाहिए
कभी यह सोचा मुझे प्रेम चाहिए
कभी यह सोचा मुझे निश्चलता चाहिए
कभी यह सोचा मुझे निष्ठा चाहिए
कभी यह सोचा मुझे विश्वास चाहिए
कभी यह सोचा मुझे पवित्रता चाहिए
कभी यह सोचा मुझे धार्मिकता चाहिए
कभी यह सोचा मुझे प्रमाणिकता चाहिए
कभी यह सोचा मुझे नि:संशय चाहिए
कभी यह सोचा मुझे शिष्टाचार चाहिए
कभी यह सोचा मुझे सत्यता चाहिए
कभी यह सोचा मुझे दीनता चाहिए
नहीं नहीं और नहीं
बचपन से लेना लेना और लेना
ऐसा क्यूं?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं एक प्रश्न आप सभी को पूछता हूं
क्या आप जो अमरीका, ओस्ट्रेलिया, इंग्लैंड आदि पश्चिमी देशों में जाते हो - रहते हो
आपने वहां कभी कलयुग की अनुभूति पायी?
और हमारे भारत देश में हर कोई घडी घडी कलयुग का अनुभव करते हैं। 🙏
ऐसा क्यूं?
मुझे माफ़ करना यह प्रश्न से 🙏
पर हकीकत कह रहा हूं
हमने शास्त्र पढ़ें
हमने कथा सुनी
हमने विचार विमर्श किया
हमने वादविवाद किते
हमने कहींओ से सुना
हां! कलियुग है - हम कलियुग के जीव है
कलियुग अर्थात दोषों युक्त जीवन
कलियुग अर्थात निम्नकक्षित जीवन
आदि आदि आदि 🙏
क्या हम यह जीवन परिवर्तित कर सकते है?
क्या हम यह जीवन बदल सकते है?
हां! अवश्य
पर शास्त्र कहता है - यह कुछ अवधि तक है बाद में बदलेगा
हम कितने अंधविश्वासी है
हम कितने मान्यता भरे हैं
हे भारत के तत्वचिंतक व्यक्ति!
यह युग हम परिवर्तित कर सकते हैं
यह युग हम अवश्य बदल सकते है
हिम्मत और सत्यता को अपना कर हमें कदम कदम बढ़ाना है। हमें स्व व्यवस्था और हर व्यवहार ऐसे चढ़ना है जो सबकुछ मेरा ही निरपेक्षता से लुटाना है।
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" तत्काल दु:ख निवृत्ति " गहराई से सोचना है

मनुष्य का आज का अर्थ है - तत्काल दु:ख निवृत्ति।

आज के मनुष्य का मन - तत्काल दु:ख निवृत्ति

आज के मनुष्य का कर्म - तत्काल दु:ख निवृत्ति

आज के मनुष्य का तन - तत्काल दु:ख निवृत्ति

आज के मनुष्य का धन - तत्काल दु:ख निवृत्ति

आज के मनुष्य का जीवन - तत्काल दु:ख निवृत्ति

जहां देखो - जहां सुनो - जहां पहुंचो - बस एक ही बात - तत्काल दु:ख निवृत्ति 🙏

है ने अचरज भरा - हर मनुष्य की यही ही चाह

" तत्काल दु:ख निवृत्ति "

बस इसमें ही जीना - इसमें ही मरना

" तत्काल दु:ख निवृत्ति "

मैं आपको विनंती करता हूं - कहें कोई उपाय

मैं आपको विनंती करता हूं - करें कोई मार्ग

मैं आपको विनंती करता हूं - करें कोई सुझाव

इसलिए तो तुरंत - कोई व्रत, कोई अनुष्ठान, कोई बाधा, कोई धागा, कोई वादा, कोई बाधा, कोई उपवास, कोई आवास, कोई तापस, कोई साधना, कोई उपासना, कोई नियम, कोई संयम, कोई वयम, कोई आयाम।

🌷 🙏 🌷 सच हम कितने अंधविश्वासी है, क्षणभंगुर है, अधैर्य है, अप्रमेयी है, अधूरे हैं।

" तत्काल दु:ख निवृत्ति " है कोई साधन अवश्य जो तुरंत निवृत करें 🙏

आप अपने अनुभव से बताओ 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

" आंसू "

हम क्या समझते है यह आंसू को!

हम जैसे जैसे समझदार होते बड़े होते जा रहे हैं

बड़े अर्थात उम्र और अनुभव से हम हमारा जीवन संवरते और पसारते जाते है।

यह आंसू कहीं ओ को देखते हैं, समझने की कोशिश करते हैं। पर जब हमारें खुद आंसू बहते हैं तब कुछ तो पता चलता है - यह आंसू क्या है?

सच कहें! यह आंसू हमारा प्रमाण है, हम क्या है और कौन है?

कौन ऐसा है जिसने आंसू नहीं बहारें!

धैर्य से समझना

भगवान बुद्ध ने आंसू बहाते

भगवान महावीर ने आंसू बहाते

भगवान राम ने आंसू बहाते

भगवान कृष्ण ने आंसू बहाते

भगवान शंकर ने आंसू बहाते

कितनी गहराई है हमारी सत्यता और पवित्रता की यह आंसू में 🙏

मेरे मित्रों! जीवन की सच्चाई स्वीकारी है तो हमें अवश्य जागना है। हम तो अति सर्वोच्च और सर्वोत्तम जीव और देहधारी है।

हम को क्या मिटायें जमाना जो जमाना हमसे है।

हमें जमाना संवारना है - संभालना है।

हम ही ऐसे सामर्थ्यवान है जो हर कुछ कर सकते है।

हमसे ही वेद है - धर्म है - सुख है - आनंद है।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

यह आंसू मेरे मेरा आत्मा है - मेरा परमात्मा है

यह आंसू मेरा प्रेम है - मेरी सत्यता है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जींदा है तो मृत्यु अवश्य है

जैसे जन्म हमारा अनायास से कोई भी योनि - कोई भी कुटुंब - कोई भी देश में होता है।

हमारी कहीं मान्यताएं - हमारे कहीं गणित - हमारी कहीं श्रद्धा और हमारा कहीं कर्म फल हमें सूचक करती है - हमारा यह जन्म है।

हम कहीं जीवन चरित्र - कहीं कर्म प्रमाण से धारणा धरते है कि यह ऐसा हो सकता है - और यह अटकलें होती रहती है।

यह सभी के पिछे संभावित कारण जीवन की सच्चाई को हम नाप सके। हम कोई जीवनशैली रच सके। अति गहराई से अध्ययन करें तो यह गणित बिलकुल सही और आवश्यक है।

यह गणित सबको अपनाना चाहिए - स्वीकार करना चाहिए।

पता नहीं हम ऐसी कैसी धारा में जीते हैं और जीते रहते है की हम यह गणित भूल गए - स्वीकार नहीं किये - या हम इतने कार्यरत है जो हम यह योग्य जीवन सिंचित संस्कृत को छोड़कर जो जीये जैसा जीये स्वीकार कर समाप्त कर दिया।

आज यही सोच से हम जींदा है और रहते है - साथ साथ हमारे वारसाई जीवन को यही रीत से जींदा करते रहते है।

इसलिए ही आज मानव समाज में बिन संस्कारीक खाईएं बढ़ती जा रही है। आज हर कुटुंब समस्याओं से भरपूर है - न कोई मार्ग - न कोई सुझाव - न कोई संकेत समझ रहे हैं।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एकादशी की सच्चाई न्यारी

हर कोई करे चतुराई

संसार जीवन की शैली भारी

एकादशी से जगाये सेवा सारी

प्रभु स्मरण पाठ सत्संग विचारी

भजन गाये कीर्तन बाजे तिहारी

उमड उमड कर रास रचे नारी

हवेली बैठक दर्शन दौडे चित्त हारी

मनडु उमंगे प्रभु संग रंगे दुलारी

ग्यारह ग्यारह भोग धराये सामग्री भारी

घर घर बुलाये वैष्णव मंडल धून धरे निराली

सितारों संग छेडे मल्हार रागिनी

प्रियतम विरह की पुरे प्यास बावरी

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धरोहर हमारी सदा खुशी और संतोष लुटाती है।
तवंगर ऐसे हैं की धन को निर्धन समझे
एक हो कर जीये वही ही आनंद धन
जमीन नहीं दौलत नहीं माल मिलकत नहीं
केवल विश्वास संस्कार और भाईचारा
यही ही हमारी धरोहर
अनेकों ने धन से लुटा
अनेकों ने तन से लुटा
अनेकों ने मन से लुटा
अनेकों ने जीवन से लुटा
अवश्य हम लुटाने ही है
प्रेम को लुटाना
उर्मि को लुटाना
आनंद को लुटाना
है ऐसी धरोहर जो प्रेम के धागों से आत्माएं बांधते है
है हमारे देश की यही संस्कृति
जो प्रेम से तवंगर
जो उल्फत से तवंगर
जो प्रीत से तवंगर
जो इश्क से तवंगर
न कल की चिंता न कोई की चिंता
केवल प्रेम ही सबकुछ
यही जीवन की सही धरोहर
ऐसे हैं हम ऐसा है हमारा देश
कोई अशिक्षित समझे
कोई असुरक्षित समझे
सदा करें प्रेम की सुरक्षा
कितनी ऊंची धरोहर
मन से तवंगर
चित से तवंगर
आत्म से तवंगर
बस यही ही मूल धरोहर
🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मुरली मनोहर मोहन गिरिधर आश न तोड़ो

दु:खभंजन मोरा साथ न छोड़ो "

हे गोपाल! हे वल्लभ! तुम ही मेरे पालनहार! तुम्ही का हूं मैं आधार।

बस तेरी ही प्रेरणा! 🌷🙏🌷

सदा तुममें समर्पण 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या हम सोच सकते है अकेले रहे?
क्या हम समझ सकते है अकेले रहे?
क्या हम सोच सकते है अकेले है?
यह धरती - नहीं अकेली
यह आसमां - नहीं अकेला
यह सागर - नहीं अकेला
यह वायु - नहीं अकेला
यह सूरज - नहीं अकेला
यह वनस्पति - नहीं अकेली
यह प्रकृति - नहीं अकेली
यह सृष्टि - नहीं अकेली
यह जगत - नहीं अकेला
यह पशु - नहीं अकेले
यह पंखी - नहीं अकेले
यह कीटक - नहीं अकेले
तो यह मानव कैसे अकेला?
कुटुंब साथ
समाज साथ
संसार साथ
धर्म साथ
कर्म साथ
तो कैसे हम अकेले?
हे आत्मा! तु परमात्मा के साथ
हे मन! तु जीवन के संग
हे तन! तु प्रकृति के संग
हे धन! तु पुरुषार्थ के संग
तो तु मुक्त कैसा?
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गहराई से और धैर्य से समझना 🙏
रात दिन सदा आज्ञानुसार जीते हैं।
क्षण क्षण सदा श्री ब्रह्मसंबंध मंत्र स्मरण करते रहते हैं।
निश दिन सदा शिक्षानुसार सेवा में रत रहते हैं।
संस्कार और संस्कृति दिशानिर्देश पुरुषार्थ करते हैं।
जो प्रमाणिकता से निर्वाह पार्जते है वही योग्यता पूर्वक उपभोग करते हैं।
दान - अनुष्ठान - मनोरथ - भेंट चरण शरण धरते है।
न कोई अपेक्षा - न कोई तितिक्षा - न कोई मुमुक्षा सोचते हैं।
काल पूजन - भाग्य विमोचन - नसीब सर्जन करते हैं।
तो संयोग विकट क्यूं?
तो परिस्थिति निष्कृत क्यूं?
तो समय अस्वस्थ क्यूं?
तो प्रकृति प्रकोपी क्यूं?
तो काल विमुख क्यूं?
तो समय विपरीत क्यूं?
तो भाग्य फूटा क्यूं?
तो नसीब लुटा क्यूं?
अनेकों गत जन्मों के फल!
भाग्य विधाता ने यही लिखा है।
नसीब को यही स्वीकारना है।
यही ही मेरी कर्म कहानी है।
एकांत में सोचें
अपने चरित्र को पूछे - भाग्य और नसीब से
शिक्षात्मक से सोचें
सलामती से सोचें
रक्षात्मक से सोचें
धर्म नियमन से पूछे
तुलनात्मकता से सोचें
अध्यात्मकता से सोचें
गुणात्मकता से सोचें
ओहहह! न कुछ पाया - न कुछ आया - न कुछ धारा
तो मैं ऐसा क्यूं?
तो मेरा जीवन ऐसा क्यूं?
तो मेरी गति ऐसी क्यूं?
तो मेरी कक्षा ऐसी क्यूं?
क्यूं - क्यूं - क्यूं
सोच कर योग्य सुनो
सोच कर योग्य समझो
सोच कर योग्य कहो
सोच कर योग्य विचार विमर्शों करें
सोच कर योग्य चिंतन करें
सोच कर योग्य स्वीकार करें
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या करते हैं हम?
क्या कर रहे हैं हम?

कोई मिलने आया
सोचेंगे - उन्हें मेरी जरूरत पड़ी
कोई बताने आया
सोचेंगे - उन्हें मेरे सीवा कोई नहीं मिलता
कोई विनंती करें
सोचेंगे - मैं ही उनका मददगार हूं
कोई जगाने आया
सोचेंगे - अपने आपको बहोत होशियार समझता है
कोई देने आया
सोचेंगे - मुझ पर बहोत भरोसा है
कोई लेने आया
सोचेंगे - मैं ही उन्हें पालता हूं
कोई सलाह मांगने आया
सोचेंगे - मुझे मानता है
कोई भूल जाते
सोचेंगे - अपना काम बन गया फिर कौन?
कोई याद आया
सोचेंगे - मुझे बनाके गया
कोई झगड़ा किया
सोचेंगे - मेरे पिछे पड़ा है

सच हम कितने गीरे हूए है?

धैर्य से
परिस्थिति से
अनुभव से
उन्हें समझो 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नवरात्रि "

माताजी का पूजन अर्चन और आराधना 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति आधारित प्राथमिक मातृस्वरुप " श्री गायत्री माता "

हमारे हर आध्यात्मिक शास्त्रों में " श्री गायत्री माताजी " का प्रथम पूजन है 🙏

क्यूंकि हमारी संस्कृति का प्रसव " श्री गायत्री माताजी " से है। 🌷🙏🌷

प्रथम दिन - श्री गायत्री माताजी अनुष्ठान "

अनेकों अर्थ न करते हुए - यह हमारी मूल धरोहर है। " श्री गायत्री माताजी " से ही प्रारंभ - आरंभ और आगमन।

हमारी गौत्र - श्री गायत्री माताजी

हमारा स्त्रोत - श्री गायत्री माताजी

हमारी ज्योति - श्री गायत्री माताजी

प्राथमिक पूजन अर्चन - श्री गायत्री माताजी 🌷🙏🌷

" ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् "

सर्वे सांस्कृतिक वेदोंपनिसदों प्रमाणित और धर्मस्वीकृत जीवों को मूल तत्वों से अभिनंदन व्यक्त और सदा संस्कृति के संरक्षक हो ऐसी विनंती करता हूं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" तापत्रय विनाशाय "

कितना अदभुत सूत्र है श्री मद्भागवत का - जो आरंभ में ही हमें जीवन का उत्तम ज्ञान और सिद्धांत का स्पर्श करवा दे - मार्ग बता दे - दिशा दिखा दे - फल दे दे।

हमारी संस्कृति भूत, वर्तमान और भविष्य समय समय पर जागृत करती है।

तापत्रय - अर्थात तिन प्रकारों के ताप - यह ताप हमें बहोत कुछ सीखाता है - समझाता है - सही दिशा निर्देश करता है। पर हम यही तापों में हम सदा अपने आपको नष्ट कर देते है।

यह ताप है - आधि - व्याधि और उपाधि।

हमारा जन्म, जीवन, धर्म, कर्म इनसे जुड़ा है। हमारी कृति, वृत्ति और प्रकृति इनसे है।

हां! अगर यह तिनों तापों से बचना है, सुरक्षित रहना है - तो वीर हो जायेंगे - संत हो जायेंगे - भक्त हो जायेंगे - प्रिय हो जायेंगे।

आधि - व्याधि और उपाधि 🌷🙏🌷

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं जा रहा था कहीं

नज़र मिली एक व्यक्ति से

नज़र नज़र से प्रणाम किया

अधर पुकार उठा " जय श्री कृष्ण "

सामने से प्रत्युत्तर आया " जय श्री कृष्ण "

दो व्यक्ति एक मित्र हूए

मित्र मित्र से मित्रों भया एक मंडल

हर मित्र सदा साथ साथ रहे

करें पुष्टि सत्संग

ऐसे हैं जीवन कर्म धन

जीये एक एक पुष्टि जन जन

श्री वल्लभ पुष्टि कृपा करें

श्री यमुना पुष्टि सिंचन करें

श्री श्रीनाथजी पुष्टि रक्षा करें

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री प्रभु स्मरण "

हमें यह आदेश बार बार कहा

हमें यह आज्ञा बार बार कही

हमें यह सूचन बार बार किया

हमें यह जागृतता बार बार जगाया

हमें यह ज्ञान बार बार दिया

ऐसा क्यूं?

यह स्मरण से हमारे प्राकृत दोष नष्ट होते हैं।

यह स्मरण से हमारा अज्ञान ज्ञान में परिवर्तित होता है

यह स्मरण से हमारा भूला हुआ रुप हम पा सकते है

यह स्मरण से हमारा आत्मा परमात्मा हो सकता है

यह स्मरण से हमारा आनंद उभरता है

यह स्मरण से हम जीव से ब्रहम होते है

यह स्मरण से हम भक्त से भगवान होते है

कितना अदभुत रहस्य 🌷🙏🌷👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रावणो की बस्ती में राम कहां

राम राम की गूंज लगाये वो हनुमान कहां

यह तो ऐसी स्थिति है

धर्म धर्म के नाम पर लंका सजाये

खुद ही खुद को अपने आपसे जलाये

ऐसी बस्ती में प्रेम दीपक प्रकटाना

जो ज्योत से ज्योत जगाते

कभी कोई सीता हो जाये

कभी कोई लक्ष्मण हो जाये

कभी कोई शबरी हो जाये

कभी कोई तुलसीदास हो जाये

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" स्मरण "

पल पल जो ख्यालों में है वही का हमें दर्शन होता है

क्षण क्षण जो यादों में है वही का हमें दर्शन होता है

घडी घडी जो विचारों में है वही का हमें दर्शन होता है

मन मन में वही उठे जो हमने मन में बसाये

नैन नैन में वही जागे जो हमने नैन में बसाये

होंठ होंठ पर वही स्वर उठे जो हमने अपने आपको जगाया

कार्य कार्य में वही फल पाये जो कर्म हमने जो रीति से किया

मित्र मित्र में वही मित्रता अनुभवे जो मित्रता निभाये

समय समय में हम वही संस्कार पाये जो हमने तन मन धन से अर्जित किया

जीवन जीवन में हम वही आनंद पाये जो आडंबर भरा न हो

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे पता है

मैं हिन्दुस्तानी हूं - कहीं कुटुंब रीति रिवाजों - समाज रस्मों और धर्म परंपराओं में जीता हूं।

यहां अकेला अर्थात बिलकुल अकेला जीना होता है - चाहें कितने बंधनों से बंधे - कितने संबंधों से जुड़े - कितने संगठनों या संप्रदायों से एकजुट होने की कोशिश करें।

पर फिर भी अकेला। क्यूं?

मान्यता - श्रद्धा - जीवन शैली - वैचारिक धारा - अनेकों अर्थों भरी निर्णायकता।

ध्येय - लक्ष - संकल्प की दिशा - द्रष्टि - कार्य पद्धति न शिक्षण में और न जीवन जीने की शैली में हो। बस जीते हैं - जीते हैं - जीते हैं। 🙏

अकेला - अकेला - अकेला

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आपने जो जीया

आपने जो कुछ किया

आपने जो कुछ पाया

आपने जो कुछ समझा

आपने जो कुछ दिया

आपने जो कुछ लिया

आपने जो कुछ लुटाया

आपने जो कुछ सीखा

आपने जो कुछ सीखाया

आपके मन से

आपके तन से

आपके धन से

आपके जीवन से

आपके धर्म से

आपके कर्म से

आपके मर्म से

आपके प्रेम से

आपकी करुणा से

आपका आपका आपका

आपका धन्यवाद 🌷🙏🌷

आपको नमन 🙏

आपको प्रणाम 🙏

आपको वंदन 🙏

आपकी जय जय हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कहीं छोटी छोटी बातें हैं जो हमने अपने स्व अहंकार और आडंबर में ऐसे घुमा दिया है, जिससे मधुर जीवन को कलयुग कर दिया।

हम बातें करते रहते है। हम ऐसे हैं, हमारा कुटुंब ऐसा है, हमारा दोस्त ऐसा है, हमारे पहचान वाले ऐसे हैं, पर जब खुद को टटोलते हैं तब हम क्या होते हैं 🙏

जन्म से सीख सीख और सलाह सलाह।

जब स्व प्रयोगिक हो तब -

हर कोई अपने आपको महान समझे

हर कोई अपने आपको संस्कारी समझे

हर कोई अपने आपको तवंगर समझे

हर कोई अपने आपको धार्मिक समझे

हर कोई अपने आपको ज्ञानी समझे

तो कलयुग कहां?

हमारी मिट्टी सत्य संस्कृति की

हमारी नदियां विशुद्ध अमृत सिंघती

हमारी आबोहवा निरोगी

हमारा अन्न अन्नपूर्णा

हमारा शिक्षण सैद्धांतिक

हमारा जीवन उच्च शैली

ओहहह!

अवश्य आज प्रतिज्ञा करले

" मैं सत्य विश्वासु समहितेषी जीव "

भिष्म प्रतिज्ञा हैं सदा यह वचन का पालन करुंगा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कदम कदम पर तेरा ही ताल

रमझट रमझट में तेरा ही उन्माद

मधुर मधुर स्वरों में तेरी ही गूंज

तरल तरल संगीत में तेरा ही राग

मैं ऐसे झुमु मैं ऐसे रमु

मेरे हाथों में सदा तेरा ही हाथ

रास रंग खेल में तेरा ही ध्यान

कान्हा तेरी ही अदा अंग अंग थाम

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

तेरे जुल्फें ऐसे बिखेर दूं

आसमां काले घनघोर घटा हो जाये

श्याम भरे रंग में तेरा मुखडा खिला दूं

मेरी उज्जवल प्रीत में श्याम राधा हो जाये

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छुपा छुपी खेले बादलों से

कभी घनघोर बादल

कभी उजियारा बादल

कभी बरसता बादल

कभी गरजता बादल

हे मेरे प्रियतम! तेरा यूं छुपछुपाना

मेरे मन को ललचाये

मेरे तन को तडपाये

मेरे दिल को विहराये

कभी तेरे नैन झांकु

कभी तेरा मुखडा झांकु

कभी तेरा जलवा झांकु

कभी तेरी हंसी झांकु

तेरे नैन से मेरे नैना उभराय

तेरे मुखड़े से मेरा मुखड़ा मलकाय

तेरे जलवे से मेरा दिल हरखाय

तेरी हंसी से मेरा प्रेम छलकाय

हे राधा! अखंड है हमरी प्रेम रवानी

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

अनेकों बार

बार बार

अनेकों अनेकों से सुना

कलयुग है - कलयुग है - कलयुग है

ध्यान से चिंतन करें - क्या हम कलयुग के जीव है?

यह कलयुग है क्या?

यह प्रश्नों इसलिए है की कलयुग और हम

हम स्व को समझ सके

और

हम कलयुग को समझ सके

ऐसा समय और ऐसे जीव को उत्तम होने के लिए यह चिंतन आवश्यक है। 🌷🙏🌷

हम अति तीव्र और जिज्ञासा से यह प्रश्नों और समय का चिंतन और अध्ययन करें तो हम कलयुग के जीव अवश्य है।

हमारा जन्म किस आधार पर हुआ?

हमारा स्वत होने तक किसने हमें उछेरा - पाला - पोशा - संस्कार शिक्षित किया वह संजोगो और सामायिक परिस्थिति में हम कैसे कैसे किस किस से जुड़े और हमने अपने आपको क्या कक्षित पर प्रस्थापित किया?

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम सलोनी यमुना
श्याम सलोनी यमुना
मेरे घर में आजा
मेरा पुष्टि प्रेम स्वीकार जा

तु मेरे मन में आना
मेरा शरण वरण अपनाना
मेरा सोलह श्रृंगार से सजना
मेरी चुनरी रंग बिरंगी ओढना
मेरी पुष्टि भक्ति में रंगना
मेरा मनोरथ पूरा करना

श्याम सलोनी यमुना
मेरा पुष्टि प्रेम स्वीकार जा

तु मेरे दिल में आना
मेरी प्रीत अमृत पीना
मेरे आनंद स्वराटानंद खेलना
मेरा अंग अंग लुट जाना
मेरा आत्म श्रीनाथ धरना
मेरा जीवन पार लगाना

श्याम सलोनी यमुना
श्याम सलोनी यमुना
तु मेरे घर पर आजा
मेरा पुष्टि प्रेम स्वीकार जा

श्याम सुंदर श्री यमुने महाराणी की जय
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जनम जनम जनम जनम

कहीं जीव शरीर पाये

आज जब जनम है

एक दिल बसे शरीर में

अवश्य यह तेरा प्यार ही है

अवश्य यह तेरा एकरार ही है

अवश्य यह तेरा ऐतबार ही है

अवश्य तेरा यह मंदिर है

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

એક વડીલ જે આપણાં પિતા હોય અથવા માતા હોય અથવા માતાપિતા હોય
મંદિર છે જીવનનું
જેમાં તેઓનાં સિંચન હોય
જેમાં તેઓનાં અનુભવ હોય
જેમાં તેઓનાં છોરું છોરી હોય
જીવે આનંદે અનેરાં સ્વપ્નાં
જીવાડે પ્રેમે અનેરાં ઉમંગે
એવું જીવાડે જે કદી ના મળે
દોડતા દોડતા લાડ લડાવે
ભૂખ્યા ભૂખ્યા સ્નેહે જમાડે
એક કપડે એક લૂગડે સંસાર ચલાવે
બાળ ગોપાળ ને શૃંગાર સજાવે
એક એક એક શિક્ષા અપાવે
બેટા બેટા સદા રહે ખુશ
જીવે કાયમ ને એક જ આશ

આજે તેઓ માતા અને પિતા
કાલે આપણે માતા અને પિતા

આપણાં થી જ આ રહે સુખી સંસાર
એટલે કદી ન ભૂલો માતાપિતા પ્રેમ

જે મંદિર છે તે જ પ્રભુ છે
સદા કરો શરણાગત ટેક
પામશું સુખી સંસાર
રાખીશું ખુશી ખુશી સંભાળ
આ જ આનંદ આ જ પરમાનંદ

"Vibrant Pushti "

"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

" द्वार "
नैन द्वार
मन द्वार
नासिका द्वार
अधर द्वार
कर्ण द्वार
गृह द्वार
मंदिर द्वार
कार्यालय द्वार
गांव द्वार
शहर द्वार
बाजार द्वार
यातायात द्वार
लोक द्वार
अर्थात द्वार से ही प्रवेश
हर रोज हम कितने द्वार पर होते है?
द्वार से ही प्रारंभ
द्वार से ही आरंभ
हमारा द्वार योग्य हम सदा योग्य
हमारा द्वार हमारी लायकात
हमारा द्वार हमारी काबिलियत
हमारा द्वार हमारी नियत
हमारा द्वार हमारी संगत
हमारा द्वार हमारी कर्मठ
हमारा द्वार हमारी गत
हमारा द्वार 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझे हर एक ने कहा श्री प्रभु स्मरण में रहो

मुझे हर एक ने कहा श्री प्रभु स्मरण करो

मुझे हर एक ने कहा श्री प्रभु स्मरण ही यह समय का मुख्य कारण है

मैंने कहा - ओहहह! कितनी ऊंची गहरी अनोखी सीख

मैं सदा स्मरण में रहा

मैंने आनंद पाया

मुझे सुख मिला

मुझे खुशी मिली

मुझे प्रीत मिली

मुझे जीत मिली

मुझे पुण्य मिला

मुझे स्वर्ग मिला

मुझे गौलोक मिला

मैं आपका ह्रदय नमन से आभार जताता हूं 🌷🙏🌷

आपसे मैंने वह पाया जो दुर्लभ है

आपको ह्रदयगम्य आत्मजन्य विनंती करता हूं की मेरी गति आपको न्योछावर हो और मैं सदा आपका दास हो कर रहूं।

आप अवश्य मेरी विनंती स्वीकारें 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बारिश ने अपना हास बिखेरा, नीले खेतों ने अपना रंग उंडेला, फूलों ने अपनी यौवनता का आकर्षण जगाया, तो लोलुप भ्रमरों की टोली गुलजार गाने लगी।

यही वातावरण में कहीं दूर से मधुर स्वर गूंजता साथ में खनकती चूड़ियों की झंकार अपने प्रिय निकुंज की ओर कदम भरती आ रही है।

एक सखि ने पूछा - अरि! यह मधुर स्वर तो अपने प्रियतम कान्हा का ही है, तुरंत दूसरी सखि बोली - अरि! वह चूड़ियों की खनखन हमारी प्रिया राधा की ही है। दोनों साथ साथ हाथों में हाथ पकडे निकुंज की ओर ही आ रहे हैं।

हां! तो चलो हम उन्हें सताये!

हम ऐसा खेल रचे की हमारी राधा रानी उन्हें अपने प्यारे रंगों से रंग दे, यही रंग में हम भी उनके हो जाये।

हां हां! बिलकुल

दोनों सखियां दौड़ कर वह लीला की तैयारी में जुट गए।

इधर प्रेमी युगल अपनी धून में प्रेम की बौछार लुटाते लुटाते निकुंज द्वार पहुंच गए।

कान्हा बोले - प्रिये! आज निकुंज खुबसूरत, रंग सभर निरव शांत वातावरण छाये क्यूं बैठी है?

प्रिया बोली - प्राणेश्वर! कोई अनोखी लीला का संकेत दे रही है।

आगे कल 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री नाथजी मेरे प्रिय
मैं आया नाथद्वारा के द्वार
तु करें मेरी सदा पुकार
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

रंग बिरंगी धजा जो लहरें
मन मोहक तेरी नगरी दिशे
मैं तो हो गया श्रीनाथ दास
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

भक्त भक्त जो टहल पुकारे
श्री कृष्ण: शरणं मम मुखारे
मैं तो हो गया श्रीनाथ पिपासु
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

आंठ शमां के तु दर्शन काजे
तु खड़ा रहे मिलन के साजे
मैं तो हो गया श्रीनाथ रास
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

मंगल श्रृंगार ग्वाल राजभोग
रुप रंग तेरा अनेकों आयोग
मैं तो हो गया श्रीनाथ सुयोग
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

उत्थापन भोग संध्या शयन
तन मन धन मेरा हुआ वरण
मैं तो हो गया श्रीनाथ शरण
मैं आया नाथद्वारा के द्वार

हे नाथद्वारा के श्री नाथ
तु हाथ ऊंचों करें मेरो साद
कहीं रहूं कैसा भी हूं
मैं पूनम को दौडी आऊं पास
हरख हरख मैं तेरे दर्शन ध्याऊं
जनम जीवन की प्यास बुझाऊं
हे नाथ! मुझे देना पुष्टि प्रसाद
मैं आया नाथद्वारा के द्वार
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

શ્રી વલ્લભ તારું નામ
શ્રી વલ્લભ તારું કામ
મને પુષ્ટિ જગાવે
મને પ્રેમ જગાવે

વલ્લભ સ્મરણ માં મનડું જાગે
અંગ અંગ માં તારું સ્પંદન જાગે
તારું અનોખું આકર્ષણ
મને પુષ્ટિ જગાવે
મને પ્રેમ જગાવે
શ્રી વલ્લભ તારું નામ
શ્રી વલ્લભ તારું કામ

વલ્લભ સિદ્ધાંત માં જીવન જાગે
વલ્લભ નિર્દેશ માં જ્ઞાન જાગે
છુટે સંસાર અંધકાર
મને પુષ્ટિ જગાવે
મને દ્રષ્ટિ જગાવે
શ્રી વલ્લભ તારું નામ
શ્રી વલ્લભ તારું કામ

વલ્લભ ધ્યાન માં આતમ હરખે
વલ્લભ રંગ માં દેહ ઉજળે
પ્રકટે પુષ્ટિ જ્યોત
મને કર્મ જગાવે
મને ધર્મ જગાવે
શ્રી વલ્લભ તારું નામ
શ્રી વલ્લભ તારું કામ

વલ્લભ વલ્લભ
વલ્લભ વલ્લભ
“Vibrant Pushti “
“જય શ્રી કૃષ્ણ “ 🌷 🙏 🌷

एक योगी सदा श्री यमुनाजी के सानिध्य में मथुरा रहता था। नित्य सेवा - सदा जो भी व्यक्ति उनके पास आये तो वह श्री यमुनाजी पूजन करवाता और आखिर में कहता - आज श्री यमुनाजी तुमसे मिलने आयेगी।

आसपास हर कोई यह व्याक्य सुनता और चले जाते। साथ साथ वह व्यक्ति भी चला जाता जिससे योगीजी ने पूजन करवाया।

ऐसे ऐसे कहीं समय निकल गये, योगी यही ही एकाग्रता से जो भी उनके पास आये उन्हें पूजन करवाता और आखिर में यही ही कहता - आज श्री यमुनाजी तुम्हें मिलने आयेगी।

एक दिन एक व्यक्ति आया और सीधा वह योगी के चरणों में दडंवत प्रमाण करके तुरंत बोला - हे योगीजी!

आप धन्य हो - आपके आशीर्वाद से श्री यमुनाजी हमारें घर पधारे, मुझे और हर कोई को आनंद करके अपने स्थानक चली जाती है।

योगी ने कुतहल वह उनकी ओर देख कर हंसने लगे 🌷🙏🌷

ऐसा क्रम करीब १० मास से श्री यमुनाजी निभा रहते हैं। आज जैसे वह व्यक्ति योगीजी के पास आया तो योगीजी ने उन्हें एक माल्याजी और एक वस्त्र दिया और कहा - आज पधारे श्री यमुनाजी तो उन्हें माल्याजी अर्पण करना और विनंती करना यह वस्त्र आप धारण करना 🌷🙏🌷

वह व्यक्ति दोनों वस्तुएं लेकर अपने घर पहुंचा। थोड़ी ही देर में श्री यमुनाजी पधारे और कहां वह माल्याजी और वस्त्र मुझे दो।

वह व्यक्ति अचंभित हो गया, तुरंत ही नमन करके कहा, हे माता! धन्य हूं! आप मेरे घर पधारे 🌷🙏🌷

श्री यमुनाजी ने कहा - हे आत्म श्रेष्ठ! वह योगीजी प्रखर पंडित और मेडिकल स्नातक हैं। उनके स्पर्श से मैं शुद्ध हो जाती हूं।

जैसे तुमने मेरे बूंद का आचमन किया तुम शुद्ध हो गये। इसलिए मैं तुम्हें हर रोज मिलने आती हूं। मेरा वास सदा विशुद्ध भक्ति में रहता है।

आज भी यह क्रम चलता है और वह योगीजी आज भी मथुरा के यमुना घाट पर ऐसे व्यक्तिओं को श्री यमुनाजी पूजन करवाता है। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे साँवरे मेरे नैन है बाँवरे

तु आजा मेरे सामने

कोई मूरत बन कर

कोई सूरत हो कर

कोई ठाकुर हो कर

कोई प्रिये हो कर

मैं विरहनी तुझे अपलक छानु

भटक भटक कर कहीं कहीं जाऊं

जहां तेरी लीला हो

जहां तेरी यात्रा हो

जहां तेरा सत्संग हो

जहां तेरा स्मरण हो

जहां तेरी यादें हो

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

तुम से प्यार करने

तुम से नैन मिलाने

तुम से सूर जुड़ने

तुम से स्पर्श जगाने

तुम से हाथ छुने

तुम से कदम चलने

तुम से आहें भरने

तुम से रुठ जाने

बहोत आनंद पाता हूं

बार बार इंतज़ार करता हूं

हे राधा! यही ही तेरे कान्हा की एकरारी है।

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - पुष्टि प्रेम स्पर्श

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

VIBRANT PUSHTI

५३, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507